उसका सपना

कमर मेवाड़ी की कहानियां

मूल्य तीस रुपये प्रथम सस्करण 1990

प्रकाशक सम्बोधन प्रकाशन, काकरोली 313 324 (राज)

मुद्रक मगल मुद्रण, चेटक सर्किल, उदयपुर 313 001 (राज)

आवरण पारस दासोत

USKA SAPNA (Short Stories)

by Qamar Mewari Rs 30 00

कवि एव कथाकार
श्री मधुसूदन पाण्ड्या के लिए

क्रम

नयी सुबह का कवि-कहानीकार

कमर मेवाडी की कहानिया पढते हुए यह याद करने की जरूरत न भी हो तब भी किसी न किसी तरह यह प्रगट होता है कि वे कवि हू। मैंने उनकी ज्यादा कहानिया नही पढी हैं लेकिन यह जानने की मेरी इच्छा रही है कि वे अपनी कहानिया को कविता से किस तरह और कितनी दूर रख पाते हैं। दरअसल मैं कविता और कहानी के बीच अतर करता हू जो केवल विधा को या विस्तार को लेकर नही है जसे यह कि किसी कविता को कुछ फैला दें तो वह कहानी हो जायगी और कहानी को कुछ सिकुड जाने दें तो वहा कविता की सम्भावना नजर आन लगेगी। मेरी दृष्टि मे यह अतर दुनिया और मनुष्य को देखने म है। कवि जिस तरह दुनिया और मनुष्य को देखता है और उनके रिश्ते को तात्विक रूप से ग्रहण करता है कहानीकार उस तरह नही लेकिन आकाश मे उडने वाली पतग को जरा सी इधर-उधर करते पूरे विस्तार मे और हिलने डुलने मे कौतुक म देखता हू।

बहरहाल कमर ने इन कहानियो मे जिन्दगी की पतग को उडने के लिए छोडी तो है लेकिन पूरी तरह नही इसलिए कहानिया अपने आकार मे न केवल छोटी रह गयी ह बल्कि एक अनुभव के सघन होने के पहले ही सिमट जाती ह।

कमर की ये कहानिया कम पेचीदा और कोलाहल रहित हैं। उनमे व्यवस्था मे सघर्ष करते लाग जहा पहुचते ह वहा भी छोटे और नीच नही होत थार यद्यपि

वे किसी प्रकार की राजनीति से प्रेरित उपदेश नही देते फिर भी उनकी जिन्दगी,
उनका हार जाना, उनका पागलपन या किसी की हत्या कर देना हम मे दुनिया
बदलने की इच्छा जगाता है

'सूरज फिर निकलेगा' की मु खिया एक मामूली स्त्री है। अकाल के दिनो मे वह
अपने बीमार बेटे शकर के स थ किसी तरह दिन काटती है। किन्तु जब शकर
की जान बचती नजर नही आती तब वह हार कर सेठ के पास पैसे मागने जाती
है। दिन मे तो सेठ उसे दु त्कार देता है लेकिन साझ होते होते वह रुपये लेकर
उस के घर पहुच जाता है, ज हा सुखिया के साथ उसका यह सवाद होता है—

'सेठ यहा क्या आए हो ?' सुखिया ने बिना सहमे हुए पूछा।
'रुपया देने।' सेठ ने जवाब दिया।
'दिन के उजाले म क्या साप सू घ गया था जो अब रात के अधेरे मे आए हो ?'
'रात के अधेरे म इसलिए आया हू कि बदले मे तुम से कुछ वसूल कर सकू ?'

एक गरीब औरत के पास स ब कुछ खरीदा जा सकता है यह 'महाजनी सभ्यता
का तक है। सुखिया सेठ की हत्या कर के इस तर्क को उलट देती है।

इस कहानी की मूल सवेदना के साथ मेरी कोई तकरार नही है लेकिन एक बात
ता यह कि हिन्दुस्तान म अमू मन स्त्रियां इतनी बहादुर नहीं होतीं और बाद मे
कोट, कचहरी के एकट अमट मीय होते हैं। दूसरी यह कि कस्बे की जिन्दगी
म कुरता की यही एक अली क हानीकारा को नजर क्यो आए ? हमारी जिन्दगी
म स्त्री का यातना देने की हज़ारा गलियां आविष्कृत हैं, उन्ही म से हम अपने
समय का गुनन से क्या कतराये ?

हमारे आस-पास के दुख और अवपात की दो और कहानियां हैं— उसका सपना,
धुए म घुम गाम। कहानिया का सपना है जमीन और धुए मे उसे कहू और
शुरुआत का सपना है मजूरी से मुक्ति। दोना कहानियों के पात्रों का
सपना पूरा नहीं होता। कहा नियां पागल हो जाने की मनःस्थिति में भी अपने
सपने का नहीं भूलता। वह ता है—

'जब मैं ... ही वापस आऊ गा। मेरा यह सपना पूरा होगा तथा कमरा की
... गिरेगी।

लेकिन वकू और तुलछा व्यवस्था के बडी साजिश के शिकार होते हैं। दरअसल वकू और तुलछा जैसे भोले भाले लोग एक पूंजीवादी देश म कानून की लाचारी और अकमण्यता नहीं समझते।

मास्टरजी उन्ह 'बधुआ मजदूरो' की मुक्ति के समाचार सुनाते हैं और वकू–तुलछा इस मुक्ति के एहसास म पागल से हो जाते ह। जब जमीदार का कारिदा बुलाने आता है तो तुलछा कहता है 'मैं नही आता। कह देना ठाकुर से। अब मैं ठाकुर का गुलाम नही। अब मैं आजाद हू। सरकार न पिछला सारा कज माफ कर दिया है। मास्टरजी अखबार म स पढकर सुना रहे थ।'

थोडे दिनो बाद मास्टरजी का कत्ल कर दिया जाता है और इस हत्या की साजिश म तुलछा को तलाश करने पुलिस वाले घूमते हैं यद्यपि 'दक्षिण पट्टी के लोग अच्छी तरह से जानते थे कि मास्टर दयाराम का कातिल कौन ह, पर वे भयाक्रात और मौन थे और भय के कारण पीपल के सूखे पत्ते की तरह काप रहे थे।'

कमर ने इस कहानी म हमारे जनतत्र और न्याय की वास्तविकता पर व्यग्य किया ह। एक पगु और निरीह कानून के अन्तगत कोई मुक्त नहीं होता। ठाकुर के लोग मास्टर का कत्ल कर देते हैं क्योकि वह जनतत्र की चेतना का मेरुदण्ड ह।

कमर की एक और कहानी का जिक्र करना मरे लिए आवश्यक ह। यह कहानी शहर की जिन्दगी से ऊबे हुए पति-पत्नी की ह जो अत म एक दूसरे स मुक्त हो जाना चाहते ह। वे हो भी जाते ह।

सुबह जब पत्नी उठी, उसने चाय बनाकर मेज पर सजाई और पति की तरफ देखा तो वह देखती रह गयी।

पति का निर्जीव शरीर पलग पर पडा था और पत्नी का चिढाती हुई पास ही लुढकी पडी थी नीद की गोलियो की खाली शीशी।'

शहर के अनात्मीय होते हुए रिश्तो की कई कहानिया हिन्दी मे लिखी गई किन्तु यह अनुभव हमारे लिए पुस्तको से आया था। दरअसल भारत में महानगरो का फलाव नहीं हुआ और न उस अथ म औद्योगिक विकास ही हुआ ह जिसके नतीजा म सिफ मौत या खुदकशी नजर आती है।

इन कहानी म 'आत्म हत्या' का हादसा 'बोरियत' के कारण होता है लेकिन 'बोरियत' क्या ? कमर के मन म युद्ध भी रहा होगा। मेरा एक अनुमान ऊपर दज है लेकिन मैं एक दूसरा और गम्भीर अनुमान भी लगा सकता हू। मैं अनुमान लगाता हू कि उनकी 'बोरियत' का कारण शायद जबान दराजी है क्योंकि वह पढ़ लिख कर कमाने खाने लग गई है।

कमर उन रचनाकारो म है जो हमारी गर बरायरी वाली व्यवस्था के खतरा और अन्तर्विरोधा को जानते है इन कहानियो मे वे कडवे प्रसग मौजूद हैं लेकिन उनकी पदचाप धीमी है और मैं यह नही मानू गा कि कमर मेवाडी के दुनिया बदलने का सपना नाकामयाबियो और हताशा म विलीन हो रहा है।

उनकी कहानियो मे बार बार 'नयी सुबह' का जिक्र आता ह, वे दरअसल हैं भी 'नयी सुबह' के ही कवि कहानीकार।

30, अहिंसापुरी
उदयपुर

नद चतुर्वेदी

बदलते रिश्ते

बस स्टॉप पर उतरते ही पूछा था ग्रीन काटेज के लिए। पूरा पता मालूम कर लेने के बाद वह वहा से चल पडा और अब ग्रीन काटेज को सामने पाकर थोडा हिचकिचा उठा। न जाने अन्दर कौन-कौन लोग हो और वे क्या समझ बठें। पर अपने म थोडा साहस बटोर वह अन्दर दाखिल हो गया है।

फाटक को पार कर सीढिया चढता हुआ सीधा एक कमरे मे पहुच गया। लोहे के पलग पर एक मोटा गद्दा साफ सुथरी धुली चादर, खूबसूरत तकिया, सफेद कपडो से ढका जिस्म, दूध धुले सफेद बाल और झुरियो मे से झाकता एक प्यारा सा क्लीन शेव्ड चेहरा।

वह दस साल बाद पिताजी को देख रहा था। उसे देखते ही उनके चेहरे पर खुशी के गुलाब खिल उठे। वे उठने की कोशिश करने लगे पर उठने मे असमर्थ। वह उनके नजदीक पहुचा। फिर से उन्हे बिस्तर पर लिटा दिया और श्रद्धा से उनके चरण स्पर्श किए। उसके ऐसा करने पर वे आसुओ की बाढ को रोक नही पाए। उनका सम्पूर्ण चेहरा आसुओ से भीग गया। उसने अपना चेहरा दूसरी ओर फेर लिया। बेंत की एक कुर्सी खीचकर बैठ गया और बात का रुख बदलने के लिए पूछ बैठा— 'अब आपका स्वास्थ्य कैसा है?'

'अच्छा हूँ ' व तपाक से बोले ।

वह जानता है वे अच्छे नहीं हैं । अगर वे अच्छे होते तो उसे यहाँ आने की जरूरत ही क्या थी ? वह विचारों के तार जोड़ने लगा ।

कमरे में सन्नाटा छा गया ।

लगा जैसे उसके आने के वक्त कमरे में जो एक विशेष प्रकार की खुशबू फैली हुई थी उसकी जगह उदासी और मनहूसियत ने ले ली है ।

पिताजी शायद यह सब भाँप गए और कमरे की घुटन से उबारने के लिए घड़ी में समय देखने लगे । फिर कुछ सोच कर बोले—
'नरेश देखो समय हो गया । समाचार आ रहे होंगे ।'

उसने टी वी चालू कर दिया ।

टी वी जो हमेशा मुल्क की खुशहाली और तरक्की के गीत गाता है आज आग उगल रहा था । अहमदाबाद में दंगा हो गया है । वहाँ किसी एक वर्ग के लोगों के जुलूस पर दूसरे वर्ग के लोगों ने पत्थर फेंके और दंगा भड़क उठा । दंगे की आग में क्या हिन्दू और क्या मुसलमान सभी भेंट चढ़ रहे हैं ।

उसने सोचा ऐसा क्या हो रहा है । ऐसा क्यों होता है ? एक ही मुल्क में रहने वाले लोग, जो आपस में भाई भाई हैं अलग अलग मजहब को मानते हुए भी जिनकी रगों में एक ही तरह का खून बहता है, एक दूसरे के दुश्मन बनकर अपने ही खून के प्यासे हो गए हैं ।

सोचते सोचते उसकी निगाह पिताजी की ओर उठ गई । उसे लगा पिताजी की आँखों में फिर कोई सैलाब उमड़ने वाला है । उसे भूली बिसरी वह बात याद आ गई जब दिल्ली में ऐसा ही एक भयानक दंगा हुआ था और उसकी माँ उस दंगे की भेंट चढ़ गई । माँ याद आते ही उसकी आँखों से भी आँसुओं की बूँदें टपक पड़ीं । उसने टी वी को एक झटके के साथ बन्द कर दिया ।

उसकी निगाह दीवार पर टंगी उस तस्वीर पर अटक गई, जिसमें पिताजी और माँ अपने दिल्ली वाले मकान के दालान में कुर्सियों पर बैठे चाय पी रहे हैं

ग्रार सामने मेज पर एक खूबसूरत टी सेट रखा ह । इस मकान के साथ उसकी भी कई यादें जुडी हैं । उसने अपनी जिन्दगी की बीस बहतरीन बहारें यहा गुजारी थी । पर अब ये सब अतीत की बातें ह, जिन्हें याद करने से सुख नहीं मिलता सिर्फ कलेजे पर चोट लगती ह । उन दिनो जब उसे मा के स्वर्गवास का तार मिला था तब वह बहुत रोया था । उसे इस बात का भी बडा सदमा रहा कि वह घर से इतना दूर होने के कारण मा के अन्तिम दर्शन तक नही कर सका । उस वक्त उसे उन तमाम स्वार्थी नेताओं पर बडा गुस्सा आया था जो देश की अशिक्षित ग्रार भोली भाली जनता को भडका कर दगे करवाते हैं ।

वह सोचता था उसका वश चले तो वह एसे लोगो को जो मुल्क को नस्तनाबूद करने पर तुले हुए हैं एक लाइन मे खडा करके गोली मार दे । पर वह जानता था वह एसा नही कर सकता ।

सुबह जब वह उठा तो धूप के चकत्ते कमरे मे बिछे हुए थे और ठडी ठडी हवा खिडकी के रास्ते अन्दर आ रही थी । उसे पिताजी के कमरे मे किसी स्त्री के बातचीत करने की आवाज कान मे पडी । वह नाइट सूट पहने हुए ही पिताजी के कमरे मे जा पहुचा । देखा पिताजी तकिये का सहारा लिए बठे हुए हैं ग्रार सामने गहुए रग की अच्छे नाक नक्श वाली एक अधेड महिला कुर्सी पर बैठी उनसे बात करने मे तल्लीन ह ।

वह क्षण भर मे ही सारी स्थिति समझ गया । उसे देख पिताजी बोल उठे, 'आओ सोमेश इनसे मिलो, ये रेहाना बेगम ह । तुम्हारी मा के स्वर्गवास के बाद से ये ही मेरी देख भाल कर रही हैं । यह मकान भी इन्ही का ह ।' पिताजी ने ज्योंही बात खत्म की, उसने झुक कर चरण स्पर्श किए तो वह आशीर्वादी मुद्रा मे बोली, 'जीते रहो बेटा ।'
फिर कुछ क्षण मौन छाया रहा ।

दवा का वक्त हो चुका था । उसने पिताजी को दवा पिलायी और बाहर निकलने को मुडा ही था कि वह बोल उठी– 'सोमेश कहा चल दिये ?'
'जी मैं जरा नहा लू, फिर तयारी भी करनी है ।'
'कहा की तयारी ?'
'आज शाम के प्लेन से जाना चाहूगा ।'
'इतनी जल्दी ? दस साल बाद अपने पिताजी से मिले हो, क्या इनके साथ कुछ दिन गुजारने को जी नही चाहता ?'

'जी तो बहुत चाहता है, पर मजबूरी है।'
'ऐसी क्या मजबूरी है ?'
'मुझे कल ही ज्वाइन करना है।'
छुट्टियां बढ़वायी जा सकती हैं ?'
'यह नामुमकिन है।'
'फिर मुमकिन क्या है ?'
'मरा जाना।' वह मुस्कराया।
'अगर आज तुम्हारी मा होती तो क्या तुम इस तरह चले जाते ?'
वह चुप हो गया। उसके पास इस सवाल का कोई जवाब नहीं था।

पिताजी चुप, लगातार शून्य मे घूर चले जा रहे थे। उनके चेहरे पर उदासी और बेचारगी के चिन्ह झलक आए। वे इस सारी बातचीत से अपने को अब तक असम्पृक्त रखे हुए थे। वह वहा से चुपचाप खिसक लिया।

बाथरूम से निकल कर कपड़े पहने और एक एक कर सारा सामान सूटकेस में जमाने लगा। फिर खाने की मेज पर जा पहुचा। पिताजी, जो पहले से ही गम्भीर बने बैठे थे, उन्होंने चेहरे पर झूठी मुस्कान बिखेर ली। खाने के समय कोई कुछ नही बोला। पिताजी और रेहाना बेगम अपने अपने गमगीन चेहरे लिए किसी सोच के समन्दर मे डुबकियां लगा रहे थे। उसे लगा जैसे वे खाना सिर्फ उनका साथ भर दे रहे है, कुछ खा पी नही रहे। इस एहसास के जगते ही उसका भी जी खाने से उचट गया और वह वहा से उठ खड़ा हुआ।

वाशबेसिन पर हाथ मुह साफ कर लेने के बाद अपने कमरे में जाकर पलग पर बिछ गया। कई प्रकार के विचार मस्तिष्क में उथल पुथल मचाते रहे पर दिशा नहीं मिली। सिर्फ काले पीले दायरे दिखाई देते रहे। महसूस होता था वह इन दायरों के बीच फस गया है और इनसे बाहर निकलने का कोई रास्ता नहीं है।

अनायास टैक्सी के हार्न की आवाज सुनकर उसके विचार तंतु टूट गए। सूटकेस के हैंडिल को उसकी हथेली ने मजबूती से जकड़ लिया।

थोड़ी ही देर में वह पिताजी के सामने खड़ा उनसे अन्तिम विदा ले रहा था। देख रहा था पिताजी उससे आखें मिलाने से भी कतरा रहे हैं। उनके चेहरे पर विवशता तथा इकलौते बेटे के खो जाने के भाव स्पष्ट रूप में अंकित हैं। वे कुछ नहीं बोले सिर्फ उनका दाया हाथ ऊपर उठा और वह इसी को अलविदा समझ

कर वाहर की ओर मुड गया। तभी रेहाना बेगम उसके सामने जमीन पर गिर पड़ी। वह हतप्रभ सा उनकी ओर एक टक देखता रह गया। उनकी आंखों मे आंसुओं का सैलाव उमड आया। वे कुछ बोलना चाह रही थी पर उनका गला रुंध गया। फिर वे अटक अटक कर सिसकियो के बीच जो कुछ बोली, उसमें से वह कवल इतना ही सुन पाया– 'सोमेश बेटा मुझ से कोई गुनाह हो गया हो तो उसे माफ कर देना।

उसे स्वप्न म भी इस बात की उम्मीद नही थी कि जाने के वक्त उसे इतना ग्मगीय होना पडेगा। उनकी अपनी आंखों म भी आंसू तर आए, पर किसी न किसी तरह वह उन्ह रोके रहा। उसने रेहाना बेगम को जमीन से उठाया और अपनी उंगली से उनके आंसू पोंछ डाले। फिर बारी बारी से श्रद्धा के साथ दोनो के कदमो मे झुक गया और कमरे से बाहर निकल आया।

टैक्सी स उतर कर जब प्लेन पर सवार हुआ तो वह हल्का हो चुका था। उसे इस बात की खुशी थी कि उसके माता पिता दोनो जिन्दा ह और वह उनसे मिल कर अपने नियुक्ति स्थान पर जा रहा ह। प्लेन मे बैठे बैठे ही उसने प्लान बनाया कि अब की बार जब दीवाली की छुट्टिया होगी तब वह अपने माता पिता के पास अधिक दिन रुकेगा। उसने सूटकेस खोला, उसमे से नए साल की डायरी निकाली और गिनने लगा कि दीवाली की छुट्टियो मे अब कितने दिन शेष ह।



मुक्ति

मै आपको उनका नाम नही बताऊगा बस आजकल नाम म रखा भी क्या है।
वे दोनो कई सालो से दोस्त थे पर उनके बीच पिछले एक साल म पति पत्नी का सम्बन्ध था।

एक साल मे ही वे एक दूसरे से इतने बोर हो गये थे कि देखते ही काटने को दौडते थे।

पति को आये बीस मिनिट हो चुके थे। पर पत्नी अपने कमरे म डटी हुई थी।

उन्होने बूट के तस्मे खोले फिर मोजे उतारे और कपडे बदलकर पलग पर पसर गये। उन्हे चाय की तलब जोरो से सता रही थी। पर उनके हाल चाल पूछने वाला कमरे म कोई नही था।

वे पलग पर पडे-पडे कसमसाते रहे और अपनी किस्मत का मातम मनाते रहे। वे सोच रहे थे कि किस तरह उन्होने इतना बडा जजाल पाल लिया। जब अकेले थे तो कितने मस्त थे। हर वक्त उनके चेहरे पर मुस्कराहट अठखेलिया किया करती थी। और अब हालत यह हो गई है कि शीशे म चेहरा देखते हुए तो अपरिचय का एहसास घण्टो तक सालता रहता है।

आखिर उन्होंने कौन सा कहर ढा दिया था। सिर्फ इतना ही तो कहा था कि पढ़ी लिखी हो और खुद कमाती हो। इसका मतलब यह नहीं कि सामने वाले को कुछ भी नहीं समझो।

बस यही बात कांटे की तरह उसके मन में अटक कर रह गयी। सप्ताह भर से रानी जी का मिजाज सातवें आसमान पर है। और उनके हर क्रियाकलाप से उपेक्षा की गंध उड़ी उड़ी फिर रही है।

अब अगर वह पढ़ी लिखी है और कमाती है तो मैं क्या करूं। मैं तो उसकी कमाई में हिस्सा नहीं बंटाता। मन चाहे जैसे उल्जलूल खर्च करती है। नित नयी साड़ियां खरीद कर लाती है। इतनी साड़ियां हैं उसके पास कि चाहे तो साड़ियों की एक प्रदर्शनी आयोजित कर सकती है। घर में रहेगी तब तक एक मोटी भोटी सी साड़ी पहने रहेगी पर जब बाहर निकलेगी तो ऐसा लगेगा मानो फैशन कम्पीटीशन में हिस्सा लेने जा रही है।

पलंग पर पड़े पड़े उनके मस्तिष्क में ऐसे ढेरों विचार चकरघिन्नी खाते रहे और वे इन कड़वे मीठे विचारों के अथाह सागर में डुबकियां लगाते रहे।

वे पलंग से इस सतर्कता से उठे कि बिल्कुल आवाज न हो फिर दबे पांव गलरी पार कर पत्नी के कमरे के बाहर जा खड़े हुए।

उन्होंने देखा पत्नी पढ़ने में व्यस्त है। वे चुपचाप बिना आहट किये पत्नी के पीछे जा खड़े हुए।

पत्नी को पता भी नहीं चला कि कोई उसके कमरे में आया है।

उन्हें तैश आ गया। झपट कर किताब को फर्श पर फेंक दिया।

पत्नी ने अचकचा कर उनकी तरफ देखा। उसकी आंखें क्रोध से फनफना रही थीं।

—यह क्या हो रहा है? —उन्होंने पूछा।
—आपको दीख नहीं रहा। उसने जवाब दिया।
—मैं क्यों आया हूं?
—मुझे नहीं मालूम।
—मालूम होगा कैसे। तुम्हें किताबों से फुरसत मिले तब न।

—क्या मतलब है आपका, पढ़ूँ नहीं ?
—मैंने कब मना किया ?
—तब फिर क्या बात है ?
—मैंने अभी तक चाय नहीं पी।
—तो मैं क्या करूं ? आपने ही तो कहा था। चाय नहीं बनेगी।
—हां, मैंने कहा था। पर क्या तुम नहीं जानती हो कि मैं चाय के बगैर रह नहीं सकता।
—क्या शहर की सारी होटलें बन्द हैं ?
—तमीज से बात करो। उन्हें फिर क्रोध आ गया।
—क्या, क्या मैं तुम्हारी कोई जर खरीद लौंडी हूं ?
—कमाल कर रही हो यार ! अरे बाबा तुम समझती क्यों नहीं कि मुझे तुम्हारे हाथ से बनी चाय के बिना मजा आता ही नहीं।
—और किस बात के बिना मजा नहीं आता ?
—रहने भी दो। बात का बतंगड़ मत बनाओ। चाय बनाकर पिलानी है तो पिला दो।
—अच्छा बाबा पिलाती हूं। अब चुप भी करो।

ज्योंही वह चाय बनाने के लिए उठी कि पति ने उसे बांहों में भर कर आसमान की ओर उठा दिया। फिर गाल और होठों का चुम्बन लेकर उसे सीने से चिपकाया और जोर से भींच लिया। पत्नी के चेहरे पर अब मुस्कराहट फूट रही थी।

उसने पांच मिनिट में चाय बनाकर टेबल पर सजा दी। पति ने किताब उठाकर चाय पर ढक दी और पत्नी की आंखों में कुछ ढूंढने लगा।

पत्नी को फिर गुस्सा आ गया।
—क्या बात है चाय नहीं पीनी ?
—यह बात नहीं।
—फिर क्या बात है ? चाय ठण्डी हो रही है।
—मुझे नहीं पीनी तुम्हारी चाय वाय।
—यह भी कोई बात है यार। तुम्हारी कोई बात मेरी समझ में नहीं आती। अभी कह रहे थे चाय पीनी है। अब कह रहे हो नहीं पीनी है।
—हां हां मैं कह रहा हूं। नहीं पीनी है।
—नहीं पीनी थी तो फिर बनवाई क्यों ?

—लो फेंक देता हू ।
—ए बाबू ! फेंकना मत । बड़ी अच्छी चाय बनी है । ले पी ले तो देख ।
पत्नी चाय का मग पति के होंठो तक ले जाती है । पति मुस्करा पड़ता है और चाय पीने लगता है ।

एक दो घू ट चाय पीने के बाद पति के चेहरे पर उदासी की गहरी परत बिछ जाती है । और वह चाय का मग टेबल पर रख देता है । पत्नी उसके चेहरे की ओर देखती है तो पति की आखो से आँसुओ की बड़ी बड़ी बूदें टपकने लगती है । पति का पूरा चेहरा आँसुओ से नहाया हुआ लगता है ।

पत्नी पूछती है—

—अब क्या बात है ?
—कुछ नही यार ।
—कुछ है तो सही ।
—कुछ भी तो नही ।
—क्या बात है ? बताओ न ।
—सुनो, मुझे यह रात दिन की खट-पट अच्छी नही लगती ।
—कौन-सी खट पट ?
—यही तुम्हारा नाच नचाना । आखिर मैं भी आदमी हू यार । यह रोज रोज का नाटक मुझ से नही खेला जाता ।
—तो मैं क्या करू ?
—सुनो ! हम दोनो पढ़े लिखे और इन्टलेक्चुअल हैं । हम आज कुछ न कुछ निणय कर लेना चाहिये ।
—चाय ठण्डी हो रही है । चाय पी लीजिए फिर निणय भी कर लेंगे ।
—नही, पहले निणय होगा ।
—कमाल करते हो यार । क्या मैं मरी जा रही हू ।
—तुम, क्यो मरो । तुम्हारी जगह ईश्वर मुझे मौत दे ।
—कुछ का कुछ बक देते हो । तुम्हे शम नही आती ।
—शम तो तुम्हें आनी चाहिये ।
—अब चुप भी करो । हर वक्त लेक्चर झाड़ते रहते हो ।
—मेरी भी कितनी अच्छी किस्मत है जो तुम से पाला पड़ा । देख लेना । एक दिन पछताओगे । हा, सच कह रही हू ।
—ज्यादा घमण्डी मत बनो । मैं जानता हू कि तुम पढ़ी लिखी और कमाऊ पत्नी हो । लोग समझते होंगे कि देखो ये कितने मस्त है । दोनो कमाते हैं

श्रौर दोनों खाते हैं। अगर कोई नजदीक आकर देखे तो पूरे शरीर पर फफोले दिखाई देंगे। मेरी तो जिन्दगी ही नरक बनकर रह गयी है। हे भगवान! इस नरक की जिन्दगी से मुक्ति प्रदान कर।

—क्यों बिला वजह भगवान को कोस रहे हो। जिसे जीना नहीं आता वह तुम्हारी तरह भगवान से मरने की दुआएँ ही मांगता है।

—अब बस भी करो। मुझे सोने दो। नींद आ रही है।

दोनों पति-पत्नी अपने अपने पलंग पर लेट कर नींद आने का अभिनय करते हैं। पर उन्हें नींद नहीं आती। पत्नी करवट बदलकर पति की तरफ मुंह कर लेती है और बोलती है—

—क्या सो गये?

—हुम, नींद नहीं आ रही।

—सुनो, एक बात कहूं।

—कहो, क्या बात है।

पत्नी थोड़ा और पति के निकट खिसक आयी। सीने से चिपक गयी। फिर बोली—

—एक बात कहूं। अगर तुम्हें मंजूर हो।

—कहो, मुझे सब मंजूर है।

—देखो हम काफी दिनों से एकरस जिन्दगी जी रहे हैं। अब अच्छा नहीं लगता।

—तुम ठीक कहती हो। वास्तव में अब अच्छा नहीं लगता।

—तुम क्या सोचते हो?

—तुम क्या सोचती हो?

—क्या हम फिर से अलग नहीं हो सकते। मैं जहां चाहूं जाऊं आऊं। जैसे चाहे रहूं। तुम भी फिर से अपने ढंग पर जिन्दगी जीना शुरू करो। कुछ लिखो-पढ़ो और अपना नाम रोशन करो।

—आखिर तुम कहना क्या चाहती हो?

—तुम मुझे मुक्त कर दो। मुझे छोड़ दो। अब यह सब अच्छा नहीं लगता। अपने आप से घृणा-सी होने लगती है।

—ठीक है, सुबह निर्णय करेंगे। अब सो जाओ। नींद आ रही है। पति ने कहा और करवट बदल ली। पत्नी ने लाइट-ऑफ कर दी और वह भी सो गयी।

सुबह जब पत्नी उठी, उसने चाय बनाकर मेज पर सजाई और पति की तरफ देखा तो वह देखती ही रह गयी ।

पति का निर्जीव शरीर पलग पर पडा था और पत्नी को चिढाती हुई पास ही लुढकी पडी थी नीद की गोलियो की खाली शीशी ।



उनकी जीत

सुबह जब कासिम बिस्तर से उठा तो उसे लगा कि उसका पूरा बदन दर्द कर रहा है। उसने मुँह हाथ धोकर शीशे में अपना चेहरा देखा तो आश्चर्यचकित रह गया। पीला-पीला सा मरियल और बीमार चेहरा देख कर वह सोच में पड़ गया कि ऐसा तो वह कभी नहीं था।

आज काम पर निकलने से पहले उसने चाय भी नहीं पी। ऐसा आज तक कभी नहीं हुआ। बिना चाय पिये वह घर से निकलता ही नहीं था। सकीना तड़के जल्दी उठ जाती थी। फजर की नमाज अदा करने के बाद वह उसके लिए चाय बनाती। फिर रात की बची रोटी और चाय का गिलास उसके सामने रख देती। वह कभी चाय के घूंट के साथ रोटी कुतरता। कभी ठण्डी रोटी को मसल कर गर्म चाय में मिला देता और बड़े ठाठ के साथ चम्मच से खाता। इस सबमें उसे बड़ा मजा आता।

इस तरह कासिम की जिन्दगी गुजर रही थी। लेकिन कुछ दिनों से वह बहुत परेशान और खस्ता हाल था। सकीना कई दिनों से बीमार चल रही थी। उसने हकीम साहब के इलाज से लेकर गंडे-ताबीज तक करवा लिये पर बीमारी दफा होने के बजाय बढ़ती ही चली जा रही थी। पिछली रात को

वह हाजी पीर की दरगाह पर भी सकीना को जियारत के लिए ले गया था। लेकिन कोई फायदा नहीं हुआ।

आठ-दस दिन से तो सकीना की हालत बहुत ज्यादा खराब हो गई थी। वह बिस्तर से उठ भी नहीं पा रही थी। कभी कभी तो वह दर्द से छटपटाने लग जाती। कासिम से उसकी यह हालत देखी नहीं जा रही थी।

उसके दोस्त किशन ने उसे अंग्रेजी दवाखाने के डॉक्टर को दिखाने की राय दी थी पर कासिम की खस्ता माली हालत उस अंग्रेजी दवाखाने में कदम रखने की इजाजत नहीं देती थी।

वह अपनी किस्मत पर बेचारगी के चार आंसू टपका कर हल्का हो जाता। कासिम की दिली ख्वाहिश थी कि वह सकीना को अंग्रेजी दवाखाने के डाक्टर को दिखाये। उसका बस चलता तो वह सकीना के इलाज में अपना सब कुछ न्यौछावर कर देता। लेकिन अब कासिम के पास उसकी अकेली जान के अलावा कुछ भी तो शेष नहीं है। थोड़ा बहुत जो कुछ भी उसके पास था वह सकीना की बीमारी की भेंट चढ़ चुका था।

आज घर में भूंजी भांग के लिए भी कुछ नहीं था। इधर उसका मालिक इलाही बख्श तीन महीने से पूरी मजदूरी नहीं दे रहा था। पगार के वक्त थोड़ा बहुत दे दिला कर उसे चलता करता। बीच में जब कभी वह उससे मांग बैठता तो बड़ी चालाकी से बहाना बना कर टरका देता।

बेचारा कासिम मन मसोस कर रह जाता। सकीना की बीमारी ने कासिम को तोड़ दिया था। वह अन्दर ही अन्दर घुटता रहता। इकहरे बदन का खूबसूरत कासिम बीमार और मरियल दिखाई देने लगा था। वह चिड़चिड़ा और गुस्सैल भी हो गया था। इलाही बख्श जैसा रुआबदार आदमी भी इन दिनों उससे घबराने लगा था। कोई ऐसी बात होती तो भी वह उसे टाल जाता और हर मुमकिन कोशिश करता कि कासिम से उसका सामना न हो।

लेकिन कासिम ने आज अपने मन में तय कर लिया था कि वह अपनी मजदूरी के बाबत मालिक से जरूर बात करेगा।

कासिम के आते ही इलाही बख्श के दिन फिर गये थे। इलाही बख्श की खदान सफेद मावल की खदान न रह कर चांदी की खदान में तब्दील हो गई थी।

इलाही बख्श अपने बाप के जमाने की एक पुरानी साईकिल पर बैठ कर मदान पर आता था। लेकिन अब वह मारुति कार म उडता फिरता है।

यह सब कासिम के हाथो का कमाल था। कासिम था तो इकहरे बदन का नाजुक सा, पर गजब का दिमाग था उसके पास। इलाही बख्श पहली नजर म ही भाप गया था कि आदमी काम का है और उसने उसे रख लिया था।

इलाही बख्श को सुखद आश्चर्य हुआ था कि कासिम का हाथ लगते ही मदान म बड़े बड़े ब्लॉक निकलने लगे थे। और इलाही बख्श की मदान 'ए' क्वालिटी के माल के लिए पूरे इलाके म मशहूर हो गई थी। जहा पहले एक ट्रक माल चार पाच हजार रुपये म बिकता था उतना ही माल अब पचास साठ हजार रुपयो म बिकने लगा। तभी तो इलाही बख्श के हाथ से वह पुरानी साईकिल छूट गई और उसकी जगह मारुति कार ने ले ली। उन्होने अपने पुराने दड़बेनुमा घर को गिरा कर एक आलीशान इमारत म बदल दिया। जिसम सभी आधुनिक उपकरण मौजूद थे।

वे अक्सर चबकर बीडी पिया करते थे। अब उनके होठो के बीच कीमती सिगार दबा रहता। गन्दे चीकट कपड़ो की जगह अब खादी के धवल वस्त्र उनके शरीर की शोभा बढा रहे होते। खादी के सफेद कपड़ो म वे किसी नेता से कम नही लगते थे। धन की वृद्धि के साथ-साथ उनकी यश वृद्धि भी आसमान छूने लगी थी। कई बड़े बड़े नेता उनके यहा मेहमान बनने लगे थे। गुजरे साल वे मक्का की यात्रा भी कर आये। अब इलाही बख्श हाजी इलाही बख्श बन गये थे। इलाही बख्श गगू तेली से राजा भोज बन गये थे। उनकी जिन्दगी म जबरदस्त बदलाव आ गया था।

न बदला था तो कासिम और उसकी जिन्दगी। वही दुबला इकहरे बदन का कासिम, किराये का घर, बीमार सकीना, अभावो और परेशानियो से जूझते दो इन्सान। सकीना बिस्तर पर थी और कासिम उसकी तीमारदारी मे दिन रात लगा रहता था, वह दौड दौड कर उसके लिए ताबीज गडे बनवाता, हकीम वद्य को दिखाता। लेकिन सकीना की बीमारी ठीक होने का नाम ही नही ले रही थी। कासिम तिल तिल कर अन्दर ही अन्दर जल रहा था। लेकिन अब कासिम अन्दर ही अन्दर नही जलेगा।

आज उसने पक्का इरादा कर लिया है। वह मालिक से जरूर बात करेगा। मालिक से नही कहेगा तो फिर किसको कहेगा अपने दिल की बात। एक अकेला

कासिम ही नहीं। मालिक का सभी मजदूरों के साथ एक ही व्यवहार है। वह किसी को पूरी पगार नहीं देता। जब सब हाड तोड मेहनत करते हैं, तब पूरी पगार क्यों, नहीं ?

आज पगार का दिन है।

उसने सभी मजदूर साथियों को इकट्ठा करके यह बात बता दी है कि वह आज मालिक से पूरी पगार देने और पिछला बकाया चुकाने की बात करेगा। सभी ने उसका साथ देने का वादा किया है।

वह मन ही मन सोच रहा है। जब वह इस दुकान पर आया था, तब मालिक के पास क्या था ? एक पुरानी टूटी साईकिल ! और आज ? आज मालिक के पास सब कुछ है और यह सब कुछ हम मजदूरों की बदौलत है। लेकिन मालिक का मन हमारी गरीबी पर नहीं पसीजता। यहां तक कि वह हमारी मजदूरी भी पूरी नहीं चुकाता। शायद उसे हमारे गरीब बने रहने में ही मजा आता है।

पारी खत्म हो चुकी है। सभी मजदूर मालिक की बैठक की तरफ बढते हैं। कासिम भी उनके साथ हो जाता है, मुनीम सभी से हाजरी पर दस्तखत और अंगूठा लगवा रहा है। मालिक भी सामने बैठा है। आज मालिक अच्छे मूड में है। सबसे पहले कासिम का नाम पुकारा जाता है।

'मालिक ! पिछला बकाया भी चुका दें आज ?' कासिम कहता है।

'नहीं मालिक, पिछला पहले ?' कासिम फिर कहता है मालिक को चुप देखकर।

सभी मजदूर कासिम की बात का समर्थन करते हैं। मालिक का बैग से नोट निकालता हाथ वहीं का वहीं रुक गया, उसकी आंखें फटी की फटी रह गई। कुछ देर पहले वाला मालिक का अच्छा मूड हवा हो गया है। वह आश्चर्य से मजदूरों के चेहरों को पढने की कोशिश कर रहा है, मजदूरों के चेहरे तने हैं, मुट्ठियां भिंची और उनकी आंखों में लाल-लाल डोरे उतरते-चढते दिखाई दे रहे हैं।

हाजी इलाही बख्श के अन्दर विचारों का ताना बाना बन बिगड रहा है। उसके होठों पर एक कुटिल मुस्कान अठखेलियां करने लगती है। शायद उसने कोई हल ढूंढ लिया है, पर अचानक उसके होठों की वह कुटिल मुस्कान न जाने कहां तिरोहित हो जाती है।

मजदूरा के सगठित इरादे को इलाही वख्श का अनुभवी और घाघ दिमाग बहुत जल्द भाप जाता है। दूसरी मदाना पर पिछले दिना हुई हडतालें और इक्लाब जिन्दाबाद के नारे उसके काना से टकराने लगते ह। वह मन ही मन निणय करता है। मजदूरो के अन्दर की इस आग को ज्यादा हवा देना अच्छा नहीं और वह सबसे मुखातिब होता ह—

'दास्तो ! कासिम ठीक कहता है। इसकी बात मुझे अच्छी लगी। हम सब बाल बच्चेदार ह। पसे की जरूरत सभी को रहती ह। कुछ महाना से माल का पसा अटका हुआ था। अब पमेन्ट आ गया ह। कल आप सबका पिछला बकाया चुका दिया जाएगा और एक खुशखबरी और 'अगले माह की पगार से सभी के पचास रुपये की बढोत्तरी कर दी जाएगी।

इलाही बख्श की बात सुनकर सभी मजदूर खुशी से झूमने लगते ह। तालियां की गडगडाहट के बीच कासिम भाई– जिन्दाबाद के नारे से पूरी मदान गूंज उठती है।

सभी मजदूर खुशी खुशी घर लौट रहे है। मजदूरा की जीत से कासिम का चेहरा भी दमक रहा है।

वह जब घर पहुचा तो सकीना दद म छटपटा रही थी। उसकी हालत देख कर कासिम की आखें भर आई। सकीना को ढाढस बधाता बोला– 'सकीना ! फिक्र मत कर अब तू बहुत जल्दी अच्छी हो जाएगी'।

शाम का धुधलका धरती पर अपनी चादर फलाने लगा था और दूर पश्चिम म आकाश पर दूज का चाद दिखाई दे रहा था।



इतने सारे सुख

आनंद ! जब तुम सीढ़ियां चढ़ते थे। तब मेरे दिल की धड़कन तेज़ हो जाती थी। लगता था तुम सीढ़ियां नहीं चढ़ रहे, मेरे दिल में दस्तक दे रहे हो। और देखते ही देखते तुम सामने आ खड़े होते। मैं तुम्हें देख कर गुलाब के फूल की तरह खिल जाती। तुम मुझे अपनी बलिष्ठ बाहों के घेरे में कस लेते। और मैं छुई मुई सी तुम्हारे सीने से चिपक जाती और न जाने कब तक तुम्हारे शरीर की मादक गंध को अपने नथुनों से पीती रहती। फिर तुम कोने में रखी कुर्सी पर बैठ जाते और मुझे खींच कर अपने पहलू में बिठा लेते। बैठे बैठे घण्टों गुजर जाते पर तुम मुझे अपने से अलग नहीं करते। मैं सोचा करती काश ! प्यार के इन लमहों को एक पूरी उम्र मिल जाती।

पर सोचने वाले की आरज़ुएं कब पूरी होती हैं। एक भयंकर तूफान आया और हमारे प्यार का मामला तिनके तिनके होकर उस तूफान की भेंट चढ़ गया।

आज जब इस सूने कमरे में बैठ कर गुजरी यादों के झरोखे में झांकती हूँ तो सिवाय एक बियाबान जंगल के कुछ और दिखाई नहीं देता।

तुम क्या जानो जुदाई का गम कितना दर्दनाक होता है। मैंने अपनी कई रातें और दिन कितनी बदहवासी में गुजारी हैं, यह मेरा दिल जानता है।

जब तुम आते थे, तब मेरा पूरा घर खुशी से झूम उठता था। चारा ओर राशनी की किरण फल जाती थी और मैं एक अविस्मरणीय स्वगिक आन द म डूबती इतराती रहती थी।

तुम्हार आन से पहले मरी नजरें घडी के काटे पर टिकी रहती। शरीर आग की भट्टी की तरह तपता रहता और जब तुम मुझे अपन सीने से लगा लत तब लगता मैं किसी ठण्ड पानी के झर की गोद म बठी हूँ।

जब तुम चले जाते तब पूर माहाल म फिर वही सूनापन समा जाता जा तुम्हार आन से पहल कमरे म तर रहा होता था।

तुम्हार सीढिया उतरन के साथ ही म दूसरे दिन तुम्हार लाटने का इन्तजार शुरू कर दती थी।

वह कितन खूबसूरत और प्यार भरे दिन थे जब जि दगी मे खुशियाँ ही खुशियाँ थी। हम खुशिया म नहीं खुशियाँ हमारे पीछे भागती थी।

तुम्ह याद हागा जब हम सैकडो हजारा मील दूर उस पहाडी के शिखर पर बन मन्दिर म गये थे। और अनायास ही तुम्हार हाथ प्राथना के लिए उठ गये थे। पता नही तुमने उसस क्या मागा था। पर जब तुम वहाँ से मुडे तब तुम्हारी आँखा की कोर भीगी हुई थी तब मैंने महसूसा था कि तुम्हार जसे नास्तिक क शरीर मे भी एक कमजोर दिल ह।

मुझे तुमसे किसी प्रमाण की जरूरत नही थी। क्योकि मुझे अपने आप पर पूरा विश्वास था और मैं तुम्ह अपनी सम्पूण आत्मा स प्यार करती थी। फिर तुम मुझे मुकम्मल तौर पर हासिल थे। इसलिए प्यार के जारी रहने म मुझे कहीं कोई सशय नही था। क्याकि तुम मुझे हर वक्त अपनी निगाहो के दायर मे कद रखना चाहत थ। मेरा जरा भी दूर रहना तुम्ह बचैन कर देता था और तुम्हारी हरकतें पागलपन की हद तक को लाघ जाती थीं।

तुम काफी सरल तथा सहृदय थे। पर तुम गुस्सल भी थे। गुस्स म तुम पर एसा जुनून सवार होना था कि तुम अपना आपा खो बठने थे। पर इससे मुझे दु ख नही सुख मिलता था। मैं एस सुख क लिए बरसा स तरस गयी थी।

जब तुम्हारा गुस्सा ठण्डा पडता तब लगता चिलचिलाती गर्मी से झुलसते बदन को ठण्डी हवा के झोंके ने सरसा दिया है। मन हलका-हलका हो जाता और वातावरण मे रात रानी की भीनी भीनी सुगन्ध फल जाती।

शायद तुम्ह याद हो। जब हम एक प्रसिद्ध पवतीय स्थल पर घूमने गये थे। तब हम प्यार के सागर मे बहुत गहरे तक डूब गये थे। वही तुमने होटल के कमर म मुझे अपनी अर्द्धांगिनी बना लिया था यह तुम्हारा अपना स्वीकार था। वर्ना मैं तो बहुत पहले से ही तुम्ह अपना सवस्व मान चुकी थी।

मुझे वहाँ की एक घटना आज भी ज्यो की त्यो याद है। हम एक शाम सन सेट पाइन्ट देखने गये थे। पहाडी के एक ऊँचे स्थान पर अच्छा सा एकान्त देख कर हम बठे थे। चारा ओर की पहाडिया पर सकडा लोग थे। आदमी और औरता का एक सलाब सा आ गया था जसे। अधिकतर जोडे जवान लडके लडकिया के थे।

सब अपने आप मे मगन और मस्त।

हम एक दूसर का बाहुपाश मे जकडे थे। और सूय को अन्तर्धान होते हुए देख रहे थे। लकिन हमे पता तक नही चला कि कब सूर्यास्त हुआ। हमे पता तब चला जब अन्धेरे ने अपनी चादर मोटी करनी शुरू की। और आस पास से झिंगुरा की आवाज ने हमारी तन्द्रा को तोडा।

चारो ओर सन्नाटे का साम्राज्य स्थापित था, पहले जो शोर गुल और भीड-भाड थी वह अब समाप्त हो चुकी थी। सभी लोग जा चुके थे।

न जान वक्त का कितना बडा रेला हमारे ऊपर से गुजर गया। जब हम पहाडी से नीचे आये। तब घोडे वाला लम्बी इन्तजार के बाद वापस लौट रहा था। तुमने उसे आवाज दी। वह हकबका कर रुक गया तथा तुम्हारे चेहरे को तीखी निगाहो से तकने लगा। तुमने उससे माफी मागी और मुझे घोडे पर चढा दिया।

मैंने घोडे पर बठ जाने के बाद तुमसे कहा था— 'चलो प्लेन पर न सही तुमने घोडे पर ता मुझे बिठा दिया।' इस पर तुमने इठलाते हुए कहा था— 'बहुत जल्द हम प्लेन से यात्रा करगे।' तुम्हारी इस बात से मेर चेहरे पर एक साथ

हजारों फुलझड़िया जगमगा उठी थी। और मेरे चेहरे पर उठी फुलझड़िया की वह जगमगाहट तुम्हारी आँखों से भी नहीं बच सकी थी।

उस रात प्यार के जारी रहने के लिए तुमने न जाने किससे अनगिनत दुआएं मांगी थी।

लेकिन अचानक हमारी जिन्दगी में ऐसी गमगीन सुबह आई कि उस सुबह तुम मुझे अपने साथ एक लारी में बिठा कर एक दूर-दराज और अपरिचित इलाके में छोड़ आये।

काश! हमारी जिन्दगी में वह बदसूरत सुबह कभी नहीं आती और न तुम मुझे उस अपरिचित इलाके में छोड़ आते। इससे तो अच्छा होता तुम मुझे समन्दर में डुबो देते या किसी ऊँचे पहाड़ से नीचे धकेल देते ताकि मेरी हड्डियों तक का पता नहीं चलता। और मुझे तुम्हारे विछोह की तड़पन से मुक्ति मिलती।

मैं आज तक इस पहेली को नहीं सुलझा सकी कि तुमने ऐसा क्या किया, पता नहीं तुम्हें इतनी जल्दबाजी क्यों थी कि तुमने अपने सारे निर्णय तुरत फुरत कर लिये तथा बड़ी बेरहमी से मुझे अपने से अलग कर दिया। और अपने इर्द गिर्द एक ऐसी लक्ष्मण रेखा खींच दी कि मैं चाहूँ तब भी उस लांघ नहीं सकूं।

मुझे नहीं मालूम था, कि तुम इतने कायर और डरपोक इन्सान हो, जो बरसों तक साये की तरह मेरे साथ रहने के बावजूद किसी के भयाक्रान्त करने पर मुझसे विरक्त हो जाओगे, और मेरे मन की थाह तक नहीं लोगे कि मेरे अन्दर कितना बड़ा तूफान मचल रहा है।

मैं सोच भी नहीं सकती कि जिस इन्सान को मैं इतना बोल्ड समझती थी। वह अन्दर से इतना लिज लिजा होगा, कि अपने सारे जजबात देखते ही देखते आग की भेंट चढ़ा देगा।

शायद तुम सोच रहे होगे, आनन्द कि मैं आज भी तुम्हारे लौट आने का इन्तजार कर रही हूँ। अगर तुम ऐसा कुछ सोच रहे हो तो यह तुम्हारी गलतफहमी है। और यही गलतफहमी एक दिन तुम्हें बर्बाद कर देगी। बस तुम्हारे लौट आने के सभी वादे मुझे आज भी अच्छी तरह याद हैं। मैंने तुम्हारे उन वादों का

चुन चुन कर यादो की गठरी मे बाध लिया है। एक दिन यादो की उस गठरी को मैं किसी समन्दर मे डुबा आऊँगी।

अब जब कुछ कहने ही लगी हूँ, तब सब कुछ कह ही डालू ऐसा मेरा मन कह रहा है। सुनो, तुम आकर जिस कुर्सी पर बठा करते थे, मैंने उसे हटा दिया है। कुर्सी ही क्या वह हर चीज जो तुम्हे अच्छी लगती थी, मैंने नष्ट कर दी ह। और कमरे को पूरी तरह बदल डाला ह।

कुर्सिया की जगह सोफा सेट ने ले ली है। फश पर दरी की जगह गलीचा बिछा दिया ह। तुम जिन बतना मे खाना खाते थे, जिस मग मे बडे चाव से चाय पीते थे और वह प्यारा सा काच का गिलास जिसके बगर तुम्हारे हलक मे पानी नही उतरता था, सभी तोड फोड दिये है। और उनका स्थान मॉडन क्राकरी ने ले लिया है।

तुम्हारी कुर्सी के सामन जहाँ टेबल पडा रहता था वहा अब एक खूबसूरत फ्रिज रखा है। तथा सामने वाले कोने मे वेस्टन का कलड टी वी शोभायमान ह। और सुनो–हमारे नाम मारुति कार एलाट हो चुकी ह और ग्रानद! तुम तो मुझे कुछ दे नही सके। सिवाय झूठे आश्वासना के पर उन्होंने गाधी नगर मे जो फ्लेट खरीदा है, वह मेरे नाम कर दिया है। हम बहुत जल्द उस नये फ्लेट मे शिफ्ट करने वाले है। बोलो! तुम्हे भूल जाने के लिए इतने सारे सुख क्या कम है?

अब उठती हूँ, बहुत सारे काम करने हैं, कहने के लिए मेरे पास अभी बहुत कुछ ह पर तुम्हारे जसे खुदगर्ज और गर जिम्मदार इसान के लिए अपने बहुमूल्य शब्दा का खजाना खच क्यो करू।

दिन ढलन लगा ह, शाम घिर रही है, खूबसूरत और पुरबहार, मुझे नहा कर तयार होना ह, उनके आन का वक्त हो गया है, वे आते ही मुझे अपनी बाहो म भर लेंगे और चुम्बनो की बौछार कर देंगे।

उनके आने के बाद हम एक पार्टी मे जायेगे, जहा एक रगीन शाम अपने सम्पूण यौवन के साथ हमारा इतजार कर रही होगी, तुम तो जानते हो मै ड्रिंक्स नही करती, पर पार्टी मे म जम कर जाम चढाऊगी, क्योकि आज की ऊँची सोसायटी मे शराब पीना आधुनिकता का पर्याय बन गया ह।

ग्रानद ! ग्राज मैं बहुत खुश हूं, मेरे पास सब कुछ है, सिर्फ तुम्हारे ग्रलावा। मैंने ये सारे खूबसूरत सपने तुम्हारे साथ देखे थे, सपने तो पूरे हो गये, लेकिन तुम मुझसे छिन गये, ग्रौर तुमने जो जख्म मुझे दिये ग्राज भी उनका दर्द रह रह कर टीसता रहता है, ग्रौर मैं इतने सारे सुखों के बावजूद खाली खाली मन लिए किसी ग्रभिशप्ता की तरह पगलायी सी इधर-उधर डोलती फिरती हूँ।



अलविदा जंगल

जंगल इतना खूबसूरत, दिलकश और प्यारा था कि अगर वहां किसी आदमी का कत्ल भी कर दिया जाता तो उसे खुशी होती, वह कभी नाखुश नहीं होता।

उसे उस जंगल में रहते हुए करीब पन्द्रह साल गुजर चुके थे और बिना किसी कष्ट के चार पांच साल और गुजारे जा सकते थे, पर अचानक न जाने उसे क्या हो गया था कि वह वहां से भाग जाना चाहता था।

उसे लगने लगा था कि यदि उसने जंगल का मोह नहीं त्यागा तो उसका दिमागी तवाजन बिगड़ जायगा, वह पागल हो जायगा या फिर किसी दिन ऐसा भी मुमकिन है कि उसका दम घुट जाय और वह मृत्यु का ग्रास बन जाय। उसने फैसला कर लिया था कि अब जंगल को खैरबाद कह देना ही फायदेमन्द रहेगा।

गुजिश्ता पन्द्रह बरस उसने बड़ी मस्ती और शान में गुजारे थे पर दो माह से वह कुछ उखड़ा उखड़ा रहने लगा था। इस उदासी की तह तक पहुंचने के लिए उसने काफी सर मारा, पर उसके हाथ कुछ नहीं लगा।

वह अपनी मंजिल से अनजान था फिर भी जंगल से भाग जाना चाहता था। वह अपने पूरे परिवेश से उकता चुका था और उसकी उकताहट धीरे धीरे नफरत की सीमा लाघने लगी थी।

उसे सब कुछ बरदाश्त के बाहर लगने लगा था। जब कोई उससे मुखातिब होता और बतियाता तो उसे लगता, सामने वाला भाले की नोक से छेद डालना चाहता है।

लोगों की निगाह इतनी जहर आलूद होती थी कि उसे अपने अन्दर नश्तर के पवस्त हो जाने का अहसास होने लगता। थूक उसके हलक से अटक जाता। चेहरा निस्तेज और असहाय हो जाता। ऐसे वक्त उसकी निगाह नीची हो जाती और वह दूसरी सिम्त की ओर चल पड़ता। तब उसे महसूस होता कि उसका पूरा शरीर बर्फ की सिल्ली में तबदील हो चुका है।

उसने सोचा अब यहाँ से निकल भागना चाहिए।

वह उठा उठकर उसने जीरो लाम्प का बटन जला दिया। नंगे फर्श पर जब पाँव ठिठुरने लगे तब उसने चप्पलें पहिन लीं फिर एक निगाह पलंग की ओर फेंकी।

उसका एक हाथ ठुड्डी के नीचे था और दूसरा सीने पर। चेहरे पर छितरी सियाह बालों की एक लट उसकी खूबसूरती में चार चांद लगा रही थी, वह गहरी नींद में अलमस्त सोई पड़ी थी फिर भी उसकी मुख मुद्रा काफी आकर्षक लग रही थी।

उसने पलग की ओर अपने कदम बढ़ाये ताकि चलते-चलते एक बार इसका चेहरा और चूम ले। पर एक-ब-एक उसके पाँव रुक गये। वह मुड़ गया और बिना उसकी ओर देखे दरवाजा खोलकर बाहर आ गया।

बाहर कुहरा छा रहा था। और हाड़ कपा देने वाली सर्द हवा। उसने गले में पड़े मफलर को कानों के इर्द गिर्द लपेटा और तेज-तेज कदमों से दफ्तर को जाती हुई सड़क की ओर बढ़ने लगा।

अचानक उसके दिमाग मे एक विचार कौंध गया कि उसने अपने भागने के बारे मे किसी को कुछ नही बताया। लोग क्या सोचेंगे कि आखिर वह गया कहाँ। सम्भव है उसके इस प्रकार गायब हो जाने से बेचारा कोई बेगुनाह फिजूल मे ही फस जाय।

पर जब उसे याद आया कि कल ही उसने अखबारो के लिए अपनी मौत का समाचार तयार कर लिया था तो उसे सन्तुष्टि हुई। उसने अपने ओवर कोट की जेब म हाथ डाला तो वहा सभी लिफाफे मौजूद थे।

वह खुशी खुशी डग भरता रहा।

चौराहा आ चुका था। चौराहे पर खडे लेम्पपोस्ट की मुर्दा रोशनी मे लेटरबाक्स ऊघ सा रहा था। उसने वे सारे लिफाफे उसमे डाल दिये। उसने सोचा कि कल जब लोग अखबारो म पढेंगे कि उसका काम तमाम हो गया है तब उन्ह बडी खुशी होगी।

यह सब सोचकर उसने राहत की सास ली।

न जाने वह कितना चला, उसे कुछ याद नही।

सुबह हो चुकी थी। सूर्य का प्रकाश चारो ओर फल गया था। वह कहा पहुच गया था। उसे कुछ भी मालूम नही था।

वह एक वियाबान म खडा था। और पीछे इतिहास की शक्ल म एक खूबसूरत, दिलकश और प्यारा सा जगल छोड आया था।

धूप तेज थी, चेहरे पर पसीना चुहचुहा आया था, उसे याद आया। जब वह भागा था— तब रात थी, घना अन्धेरा था और कडाके की ठण्ड। इस वक्त दिन है, चारो तरफ प्रकाश फला है और बदन पसीने मे सरावोर है। उसने सोचा कि उसके दौडने, भागते पूरी एक मौसम गुजर चुकी ह। उसे खुशी हुई कि बिना खाये पिये, बिना थके हारे वह एक मौसम तक जिन्दा रहा है।

जगल पीछे छूट चुका था।

अब वह एक अलग ही दुनिया म आ गया था। जहा न शोरगुल था, न परिवार वालो की चख-चख थी, न प्रेमिका की फरमाईशें। वहा सिर्फ ऊँचे-नीचे मैदान थे, घाटिया थी और पहाड थे।

रास्ते मे उसे न कही शहर मिला, न गाव, न कोई आदमी, न आदमजाद कही कही दरख्त जरूर नजर आए पर उनके सरा पर पत्ते नही थे। तालाव और कुए भी दिखाई दिये पर उनम पानी नही था।

अब वह थोडा असमजस मे पड गया था कि आखिर वह कहा आ गया है। वह चला जा रहा है पर उसका कही अन्त नजर नही आता। उजाला है पर सूय कही दिखाइ नही देता आखिर माजरा क्या है।

वह एक बडे मे काले शिलाखण्ड पर बठ कर यही विचार कर रहा था कि एक पहाडी की तलहटी म उस कुछ हलचल नजर आयी।

वह पहाडी की ओर बढ चला।

उसने देखा कि असख्य स्त्री-पुरुष नग धडग अवस्था म एक घरा बना कर नाच रहे हैं नाच के साथ साथ वे अपनी भाषा म कुछ गा भी रह थे।

वह पहाडी पर चढ गया और एक अच्छी सी समतल चट्टान पर बठ कर उनका नाच दखन लगा।

वह एक एस स्थान पर बैठा हुआ था कि आसानी से उन्ह नाचते हुये देख सकता था। पर नाचने वाल उस नही दख सकत थ।

नृत्य अविराम चल रहा था।

व स्त्री-पुरुष रात दिन नाचत रहत बिना खाय, बिना साय, बिना थक। इस प्रकार नाचत-नाचत कई मासम गुजर गय। पर उनका नाच बन्द नही हुआ, न उनके घर थे न परिवार न बाल-बच्चे। उनका न खान की चिन्ता थी और न सान की ओर न पहिनन की। शायद उनकी जिन्दगी का अथ ही सिफ नाचना था। हा यह बात जरूर थी कि एक अदृश्य नगाडे की आवाज की तान पर उनके पाव उठत थ। और वे मस्ती म झूम झूम कर नाचत थ।

जब इस तरह पहाडी पर बठे-बठे उस कई बरस बीत गय तब वह वहा स नीच उतरा और नाचन वाला क निकट जा पहुचा।

वह किसी एक से कोई सवाल पूछता उससे पहले ही नगाड़े की आवाज बन्द हो गयी।

अचानक बीन के बोल चुक गये और नाच बन्द हो गया।

उसने देखा कि वे असंख्य स्त्री पुरुष जो बरसों से नाच गा रहे थे एक दूसरे पर मरे पड़े हैं, और उनके शरीर से गाढ़ा लाल खून निकल रहा है। खून ने धीरे-धीरे रक्त नदी का रूप धारण कर लिया है, और अब उस रक्त नदी में उनकी लाशें तर रही हैं।

वह डर जाता है और डर के मारे उसके मुंह से एक भयानक चीख निकल पड़ती है।

उसे लगता है कि रक्त नदी अपने में समेटने के लिए उसकी ओर तेजी से बढ़ रही है। अगर वह यहां से नहीं भागा तो बहुत जल्दी ही उसका शिकार हो जाएगा। इस अहसास के जगते ही वह भागने के लिए अपने आपको तैयार कर लेता है और जिस ओर से वह यहां आया था उसी ओर मुंह करके बेतहाशा भागने लगता है।

वह भागता रहता है और पीछे मुड़कर नहीं देखता।

भागते भागते उसे महसूस होता है कि वह भयानक काला जंगल बहुत पीछे छूट गया है।



उसका सपना

कालिया मजबूत और कडियल जिस्म का मालिक था। मै जिस फक्टी म सुपरवाइजर था कालिया वहा पत्थर तोडन और तराशन का काम करता था।

वह एक मावल फक्ट्री थी। बहुत सार मजदूर वहा काम करत थ। बिजली मशीन पर एक ट्राली म बडे बडे पत्थर के ब्लाक फिक्स करक चढा दिय जाते और तेज धारदार ब्लेडें पत्थर का सीना चीर कर आर पार निकल जाती।

इस इलाके म मावल का खूब भण्डार मिला था।

देखते-देखत कई छोटी बडी फक्ट्रिया इस इलाके म स्थापित हो गइ थी। आस पास के सकडा मजदूर इन मावल फक्ट्रिया स जुड गय थे। अब यहा की धरती सोना उगलन लगी थी।

कालिया एक ऐसी ही फक्ट्री म मजदूर था। पक्का काला रग, फौलादी शरीर, बडी-बडी आखें जिनम हर वक्त लाल-लाल डोरे फलत सिकुडत रहत। उसकी आखो म देखन पर लगता यहा एक आग मुद्दत स जल रही ह और ठण्डी होन का नाम नहीं ले रही।

लेकिन कालिया बडा व्यवहार कुशल और हसमुख व्यक्ति था। बहुत ही आहिस्ता आहिस्ता और शब्दो को तोलता हुआ बोलता। अपनी बात वह इस ढग म कहता कि आप उसकी विनम्रता और सरलता के सामने नतमस्तक हो जाते।

उस फक्ट्री मे लगभग डेढ सौ मजदूर काम करते थे। जो आस पास के गावो के थे। सुबह आते, दिन भर मजदूरी करते और शाम को हसी खुशी अपने गाव घर लौट जाते। इन्ही म कालिया भी एक था। वह रोज घर नही लौट सकता था। क्योकि वह बीस किलोमीटर दूर के एक पहाडी गाव से आया था। उसके साथ उसकी पत्नी चम्पा भी थी। कालिया ने फक्ट्री के सामने वाली पहाडी पर एक झोपडी खडी कर ली थी। उसी झोपडी मे वह चम्पा के साथ मौज मस्ती से रहता था।

लेकिन अचानक कभी कभी कालिया म परिवतन आ जाता उसकी बात करने की लय भौथरा जाती। उसका चेहरा तनावग्रस्त हो जाता। ऐसे समय वह सामने वाले पर आक्रमण करने की मुद्रा मे होता। इस दरमियान वह कभी मेरे सामन पडता तो मुझे देखा अनदेखा कर निकल जाता या दूसरी तरफ नजर फिरा लेता।

एक दिन जब वह फक्ट्री के बाहर बनी चाय की गुमटी पर बठा सुस्ता रहा था। मैंने उससे पूछा— 'कहो कालिया कसी तबीयत है?' उसने तपाक से जवाब दिया— 'क्या ठीक नही लगती आपको? क्या हुआ मेरी तबीयत को? मैं बहुत अच्छा हू साहब, बहुत अच्छा!' उसके जवाब मे तलखी थी और थी गर्मागर्म प्रश्नो की बौछार।

मैं कुछ समय चुप रहा। फिर बोला— 'चेहरा आदमी के अन्दर का सारा भेद प्रकट कर देता है कालिया।'

उसके चेहरे पर हल्की सी मुस्कराहट दौड गई। उसने अपने को सयत किया और बोला— 'आप ठीक कहते हैं साब। आप अपने आदमी हैं। आपसे क्या छिपाना।'

कुछ देर माहौल म सन्नाटा छाया रहा।

वह मन ही मन कुछ सोचता रहा। फिर उसने जो बताया उसका सारांश इस प्रकार था।

उसके बाप के पास कुल जमा दो बीघा जमीन थी। जिस पर वह फसल उगाता। पूरा परिवार उस जमीन पर आश्रित था। अचानक उसके बाप को रुपयों की जरूरत हुई। वह जमीन एक जमींदार के यहां रहन रख दी गयी। बाप जमींदार के रुपये चुकाये बिना दुनिया से चल बसा। पता नहीं उसके बाप ने जमींदार से कितना कर्ज लिया था। अब जमींदार का कहना है कि ब्याज सहित कुल दो हजार रुपये की रकम बनती है। दो हजार चुकें तो जमीन उसकी हो।

अब कालिया का सिर्फ एक ही सपना है— जमीन।

जब तक जमीन को जमींदार के चंगुल से नहीं छुड़ा लेता। तब तक वह सुख की सांस नहीं लेगा। यही वजह है कि कालिया अपने काम में जी तोड़ मेहनत करता है। महीने में बीस दिन वह ओवर टाइम करता है। जिस दिन वह ओवर टाइम करता है उस दिन उसके चेहरे पर थकान का कोई चिह्न नहीं होता बल्कि उसके अंग अंग से उमंग फूटती रहती है। शाम को जब वह ओवर टाइम करके अपनी झोंपड़ी में पहुंचता है। चम्पा उसके लिए रोटियां सेक रही होती है, तब उस छोटी-सी झोंपड़ी में एक अनाम गंध तैर रही होती है। वह मस्ती में चम्पा को अपनी बलिष्ठ बाहों में उठाकर हवा में झुला देता है। फिर चीख कर कहता है— 'चम्पा! अब हम अपनी जमीन वापस लेंगे। तुम देखना बहुत जल्द जमीन हमारी हो जायगी। बस कुछ दिनों की बात और है। फिर हम अपनी जमीन पर फसल उगायेंगे।'

और चम्पा सिमटी सिकुड़ी कालिया के बालकपन को अवाक् देखती सुनती रहती। तब कालिया चम्पा को सम्बोधित कर कहता— 'तुम कुछ बोलती नहीं चम्पा।'

चम्पा क्या बोलती बेचारी गांव की गंवार औरत उसकी तो समझ में कुछ नहीं आता। वह कालिया की हरकतों से कभी कभी उलझन में पड़ जाती। मन में सोचती कालिया जमीन के पीछे बावरा हो गया है। कहीं यह बौरा गया तो उसका क्या होगा। वह उसकी बात पर हंस देती और इतना सा और कहती— 'भगवान जाने तुम रात दिन क्या सोचते रहते हो।'

इस पर कालिया कहता— 'अरे पगली! भगवान तो सब कुछ जानता है। वही तो सबका पालनहार है। कीड़ी को कण और हाथी को मण वही देता है। देखना एक दिन हम अपनी जमीन पर खेती करेंगे। मैं हल चलाऊंगा और तुम मेरे लिए रोटियां लेकर आओगी फिर देखना खेत की मेड़ पर बैठ कर रोटी खाने

का मजा। ठण्डी रोटी और प्याज का स्वाद भी ऐसा लगेगा मानो ठाकुर जी छप्पन भोग अरोग रहे हों।

और चम्पा ठठा कर कालिया की बातों पर हस देती। मन मे सोचती काश! रामजी कालिया की बातें सुन लें और जमीन एक बार वापस हमारी हो जाये तो मैं समझूं इस जनम का मनरा जूण अकारथ नहीं गया।

एक दिन सन्ध्या को कालिया नाचता कूदता झोंपडी म आया और अपनी आदत के मुताबिक चम्पा को धरती से उठाकर हवा मे झुला दिया चम्पा भौचक्की रह गयी।

'क्या हो गया रे कालिया?' उसने पूछा।

'कुछ नहीं।' कालिया न जवाब दिया।

'बड़ा खुश दिख रहा है आज।

'हा, बहुत खुश—बहुत खुश—आज मैं बहुत खुश हू।'

'ऐसी क्या बात हो गयी जो इतना खुश है रे?' चम्पा ने जानना चाहा।

'अरे मूरख अपने वो सिरीमाल साहब है न। भगवान सरूप आदमी हैं। जिनके पास मैं अपने रुपये जमा किया करता था। आज बोले, कालिया तेरी तपस्या पूरी हो गयी। मैं कुछ समझा नहीं। तब उनने कहा—भाई मेरे पास तेरे दो हजार रुपये जमा हो चुके है—जब तू चाहे अपने रुपये मुझसे ले लेना और अपनी जमीन छुड़ा लेना।

सुनकर चम्पा के चेहरे पर ललाई दौड़ गयी। उसे लगा आज उसके चारो धाम पूरे हुए।

जब मैंने सुना कि कालिया अगले हफ्ते अपनी जमीन छुड़ाने गाव जा रहा है। तो सुनकर बहुत अच्छा लगा। मैंने सोचा चलो ईश्वर ने एक गरीब की इच्छा तो पूरी की! वर्ना ईश्वर को फुरसत कहा जो गरीबो की सुने। वह तो हरदम अमीरो की ही सुनता है।

मुझे इस बात की बेहद खुशी थी कि कालिया का सपना साकार होने जा रहा था।

लेकिन एक दिन मुंह अन्धेरे किसी ने दरवाजे पर दस्तक दी। मैं बाहर आया तो देखा कालिया एक कोने में खड़ा है। छूटते ही बोला— 'साहब, चम्पा बीमार है। रातभर से तड़प रही है। उसे अस्पताल ले जाना है' मैंने जल्दी जल्दी कपड़े पहने और उसके साथ चल दिया। फैक्टरी के ड्राइवर को जगाकर जीप बाहर निकलवायी और चम्पा को लेकर अस्पताल पहुंच गया।

अस्पताल बूचड़खाने जैसा था। कहने को तो यह रेफरल अस्पताल था। वहां राजनेताओं की जिद के कारण नव निर्माण के नाम पर अनाप शनाप धन नीचे ऊपर कमरे बनाने में खर्च किया जा रहा था। चारों ओर दुर्गन्ध फैली हुई थी। वार्डों में काफी अफरा-तफरी मची थी। बरामदे में ही मरीज इधर उधर बिखरे पड़े थे। आने जाने वाले मरीजों को लांघते फलांगते एक ओर से दूसरी ओर आ जा रहे थे।

मेरे परिचय के कारण जल्दी ही एक डाक्टर ने चम्पा को देखा और वार्ड में भर्ती कर लिया। डाक्टर ने एक पर्ची पर कुछ दवाइयां लिखी और पर्ची कालिया के हाथ में पकड़ा दी।

करीब एक माह तक चम्पा अस्पताल में भर्ती रही। इस बीच कभी कभार कालिया फैक्ट्री में नजर आ जाता बाकी दिन रात वह चम्पा की सेवा में लगा रहता। उसके जमीन छुड़ाने के लिए इकट्ठा किये सारे रुपये चम्पा की बीमारी की भेंट चढ़ गये।

अब कालिया वह मजबूत और कड़ियल जिस्म वाला कालिया नहीं रहा था, चम्पा की बीमारी ने उसे काफी कमजोर कर दिया था। बीमारी थी कि जंगल की आग की तरह बढ़ती ही जा रही थी।

और एक दिन उस बेरहम बीमारी ने कालिया का सर्वस्व भी छीन लिया।

चम्पा को दो तीन उल्टियां आयीं और वह सदा के लिए सो गयी।

कालिया चीखने चिल्लाने लगा। उसने अस्पताल का सामान इधर उधर फेंक दिया। अपने कपड़े फाड़ डाले तथा सिर को दीवारों से टकरा टकरा कर लहूलुहान कर दिया।

बड़ी मुश्किल से अस्पताल के अमले ने उसे वश में किया।

चम्पा की मौत के बाद कभी कालिया दिखाई नही दिया ।

बाद मे सुना कालिया पागल हो गया ।

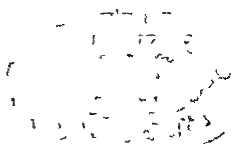
सुनकर मुझे बेहद दुःख हुआ । मुझे लगा मेरा अपना ही कोई आत्मीय मानो बिछुड़ गया हो ।

मैं कालिया से मिलने मेंटल अस्पताल गया था । मुझे देखते ही उसके मुरझाये चेहरे पर एक हल्की-सी मुस्कान फैल गयी । पर वह बोला कुछ नही । शरीर से वह काफी अशक्त लग रहा था । पर जब मैंने उसकी आंखो मे झांका तो मुझे वहां वही चिर परिचित आग जलती हुई दिखाई दी ।

जब मैं वहा से लौटने लगा तो उसने मेरी बांह पकड़ ली और मेरे कान मे फुसफुसाने लगा— 'साहब मैं जल्दी ही वापस आऊंगा । खूब मेहनत करूंगा । चम्पा तो चली गयी । पर मुझे अपना सपना पूरा करना है । मेरा यह सपना पूरा होगा तभी चम्पा की आत्मा को शान्ति मिलेगी ।

मैंने उसका कंधा थपथपाया और बाहर आ गया । बाहर सन्नाटा था । हवा खामोश और चुप । सिर्फ मेरी आंखो की कोर भीगी हुई थी ।

□



आतंक

गर्मी बेहद तेज थी पर माहौल में बर्फानी हवाएं घुमड़ रही थी। इमारत बहुत बड़ी थी और उसका नंगा फर्श बर्फ की सिल्ली की तरह सर्द था। फिर भी ढेर सारे लोग गठरियों की तरह बेतरतीब से इधर उधर दुबके पड़े थे।

इमारत की खिड़कियां खुली थीं। खिड़कियों के रास्ते हवा के तेज झोंके के साथ लाशों की दुर्गन्ध चारों ओर फैल जाती और नथुनों के रास्ते शरीर में प्रवेश कर जाती।

लोग चुपचाप मुर्दों की तरह पड़े थे। उनके जिन्दा होने का अहसास सिर्फ उस वक्त होता था जब हवा का कोई बदबूदार झोंका उनके नथुनों से टकराता। फिर भी उनकी जबान नहीं खुलती। उनके चेहरे पर एक विशेष प्रकार के भाव उगते, उनकी निगाह आपस में एक दूसरे से टकराती। फिर वे एक दीर्घ निःश्वास छोड़ते और फ्यूज होते बल्ब की तरह बुझ जाते।

सब चुप थे। बूढ़े जवान और बच्चे। आश्चर्य तो इस बात का था कि चौबीसों घण्टे बड़-बड़ करने वाली स्त्रियां भी चुप थीं और दुधमुंहे बच्चे भी। लगता था इन सबके मुंह एक साथ किसी ने सिल दिये हैं।

कहीं कोई हरकत नहीं थी। पूरी इमारत मे भयानक सन्नाटा पसरा पड़ा था। धीरे धीरे अंधेरा गहराने लगा। एक कोने मे कुछ खुसर-फुसर हुई। एक युवक आहिस्ता से उठा और एक-एक कर इमारत की खिडकिया बन्द करने लगा। जब वह सभी खिडकिया बन्द कर चुका, तो उसने बिजली का बटन दबा दिया। बटन दबते ही जीरो वाट की मरी-मरी रोशनी चारों ओर बिखर गई।

इतने मे एक बूढा अपनी जगह से उठा और उसने अपने कापते हाथों से उस युवक के दोनो बाजू पकड लिए। फिर फुसफुसाया— 'क्या सभी को मार डालने का इरादा है। बत्ती बुझा दो, और अपनी जगह जाकर वैसे ही चुपचाप बठ जाओ।'

'ठीक है।' उस युवक ने कहा और बत्ती बुझा दी। फिर सहम कर एक ओर बठ गया। जसे रोशनी करना कोई गुनाह हो।

पूरी इमारत अन्धेरे मे गक हो गई थी। कुछ भी दिखाई नही दे रहा था। फश पर किसी के कदमो की आहट जरूर सुनाई दे रही थी। वह आहट भी एक जगह जाकर बन्द हो गई। कुछ देर बाद एक खिडकी के खुलने का महसास हुआ। फिर दूसरी, फिर तीसरी। इस तरह एक के बाद एक सभी खिडकिया खुल गई।

थोडी देर बाद बन्दूक से गोली चलने की आवाज सुनाई दी। खिडकी के पास से एक दरनाक चीख उठी और अन्धेरे को चीरती हुई उस इमारत के सीने में चाकू की तरह पवस्त हो गई।

पूरी इमारत यकबारगी जसे हिल गई। ऐसा लगा मानो इमारत के किसी एक भाग म बम फटा हो। इमारत मे पडी बेतरतीब गठरिया अपनी-अपनी जगह पर कापी और उस ठण्डी रात मे भी उनकी पेशानी पर दहशत की वजह से पसीने की बूदे निकल आई।

सुबह जब सूरज निकला और उजाला फैला तो मैंने देखा रात वाला दम-घोटू सन्नाटा टूट चुका है। गठरिया हिल डुल रही हैं और इमारत म उनकी चहल-कदमी जारी है।

कुछ लोग खिड़की के पास एक लाश के इर्द गिर्द जमा हैं और खिस खिसा कर बातें कर रहे हैं। यह उसी बूढ़े की लाश थी जिसने रात एक युवक को बाजुओं से पकड़ कर बत्ती बुझाने की सलाह दी थी और बत्ती बुझने के बाद खुद खिड़कियां खोलने लगा था और खिड़कियां खोलते खोलते गोली का निशाना बन गया। उसके कपड़े खून से रंग गये थे और आस-पास फर्श पर गाढ़ा गाढ़ा काला खून जम गया था।

लोगों में अफरा तफरी मची थी। चाय तो बहुत दूर की बात है पानी का नल भी बन्द था—भूख और प्यास की वजह से सब बेहाल थे। एक बीमार बूढ़े का पूरा शरीर गन्दगी से लथपथ था। रात ही को उसने दम तोड़ दिया था। अब मक्खियां उस पर भिनभिना रही थीं। कल की हलाक हुई एक मां के दूध मुंहे बच्चे ने भूख से बिलबिलाते हुए अपनी दादी की सूखी छातियों को अपने दांतों से कुतर डाला था और अब वहां से खून टपक रहा था। दादी बेचारी दर्द के मारे मिमिया भर रही थी। पूरी इमारत एक नरक बाड़े की तरह लग रही थी।

मेरे अन्दर भी भूख का ज्वालामुखी उमड़ने लगा। लकड़ी की एक मेज पर चढ़ कर मैंने रोशनदान के रास्ते गली में झांका। पूरी गली सांय सांय कर रही थी। दूर तिराहे पर एक सिपाही बन्दूक लिए गश्त लगा रहा था।

मैं मेज से उतर कर एक खम्बे के सहारे खड़ा हो गया। और जेब से निकाल कर अन्तिम सिगरेट सुलगाने लगा। धूप के बावजूद ठण्ड बढ़ गई थी। और शरीर बर्फ की सिल्ली में तब्दील होने लगा था। मैंने सिगरेट का एक कश खींचा तो खाली पेट में एक झुरझुरी सी दौड़ गई। तीन-चार तेज-तेज कश खींचने के बाद मुझे लगा कि ठण्ड का असर कुछ कम हुआ है।

दोपहर दो बजे के करीब किसी ट्रक के आने और उसके रुकने की आवाज सुनाई दी। पर किसी ने भी खिड़की से बाहर मुंह नहीं निकाला। सभी दम साधे अपनी अपनी जगह चिपके रहे।

थोड़ी देर बाद इमारत के दरवाजे पर डण्डे की ठक ठक की ध्वनि के साथ एक रोबीली आवाज सुनाई दी—'दरवाजा खोलो! हम तुम्हारी मदद के लिए आये हैं।' पर कोई अपनी जगह से हिला तक नहीं। दो-तीन बार इसी तरह की

आवाज इमारत के सन्नाटे को तोडती रही। फिर भूख-प्यास से बेहाल एक कमजोर-सा आदमी कापता हुआ मेज पर चढ कर गली मे झाकने लगा। और आश्वस्त होकर नीचे उतर आया। लोगो से उसकी निगाह मिली और आखो ही आखो म इशारे हो गये।

कुछ लोग अपनी जगह पर खडे हो गये। और कुछ अब भी गठरी बने बैठे रहे। जो आदमी मेज पर चढ़ा था, आगे बढा और उसने दरवाजा खोल दिया।

दरवाजा खुलते ही पुलिस की वरदी पहने एक इसपेक्टरनुमा आदमी ने दरवाजा खोलने वाले आदमी का कालर पकड कर दो थप्पड जड दिये– 'स्सालो ! दरवाजा खोलने मे हो   फटती है।'

थप्पड खाने वाला आदमी जमीन पर गिर गया। इन्स्पेक्टर ने उसे उठाने की कोशिश की तो वह फिर जमीन पर गिर पडा— 'अरे ! स्साला यह तो बेहोश हो गया। इन्स्पेक्टर ने कहा।

इमारत मे वापस सन्नाटा छा गया। गठरियो की पेशानी पर पसीने की बून्दें चमकने लगी और बदबू के साथ साथ सम्पूर्ण वातावरण मे दहशत फैल गई।

इन्स्पेक्टर ने एक बार चारो ओर नजर फेंक कर वातावरण को सूघा। जब उसे सबकुछ ठीक ठाक लगा तो वह बोला— 'जल्दी से जल्दी यहा से निकलो। नीचे ट्रक खडा है। उसमे जाकर बठो ताकि तुम्हे सुरक्षित स्थान पर पहुचाया जा सके।'

इन्स्पेक्टर की बात का किसी पर कोई असर नही हुआ।

जब एक भी आदमी अपनी जगह से नही हिला तो इन्स्पेक्टर फिर भुडका– 'स्सालो ! जल्दी करो, दगाई यहा आ पहुचे तो तुम मे से एक भी जिन्दा नही बचेगा।'

इन्सपेक्टर के यह कहते ही चार सिपाही अन्दर आ गये और पकड-पकड कर सबको बाहर निकालने लगे।

जितने लोग ट्रक म आ सके उन्होंने भर लिये। बाकी का इन्स्पेक्टर ने यह कहते हुए खदेड दिया— 'भाग जाओ यहा से, भाग जाओ और अपनी जान बचाओ।'

इन्स्पेक्टर का संकेत पाते ही ट्रक एक दिशा की ओर चल पड़ा।

खदेड़े गये लोगों म, मैं भी शामिल था।

जगह-जगह लाशें पड़ी थीं। उन पर कुत्ते चिचिया रहे थे। और लाशों की दुर्गन्ध चारों ओर फैली हुई थी।

हम सब एक साथ थे। और सोच रहे थे कि कहां जायें। इतने म एक ऊंची बिल्डिंग से गोलियां चलने की आवाज आई और हमारे तीन चार साथी जमीन पर गिर कर तड़पने लगे। और फिर वहीं ढेर हो गए। हम कुछ देर सकते की हालत मे खड़े रहे। फिर जिसस जिधर बन पड़ा उधर भागने लगा।

मैं लगातार भागते-भागते थक गया था। और हांफने लगा था। सुस्ताने के लिए एक जगह रुका तो वह दिखाई दे गई। मैं फिर भागने ही वाला था कि उसकी आवाज सुनाई दी— 'डरो मत और ऊपर आ जाओ।'

मैंने इस बार उसकी ओर देखा। वह एक युवती थी। जो अपने मकान की खिड़की में खड़ी थी और मुझसे मुखातिब थी।

उसने अपनी बात फिर दुहराई।

मैं काफी थक गया था। भूख और थकान से इतना अशक्त था कि अगर उस वक्त मुझे भी कोई गोली मार देता तो मैं उसका बड़ा आभार मानता।

पर इस बार मेरे सामने बन्दूक नहीं एक युवती थी। और वह मुझे बुला रही थी।

जब मैं ऊपर पहुंचा तो वह बोली—

—क्या बात है, बहुत डरे हुए हो?

—हां

—क्यों?

ा तुम्हें पता नहीं, शहर में दंगा हो गया है ?

ह तो पता है कि दंगा हो गया है। पर यह पता नहीं कि दंगे का कारण
या है।'

मुझे भी नहीं मालूम।'

'फिर इतने डरे हुए क्यों हो ?'

'मौत से कौन नहीं डरता !'

ह मालूम है मैं यहां अकेली हूं।'

—'ठीक है।'

—'मेरे बारे में तुम क्या सोचते हो ?' उसने पूछा। मैंने अब उसकी ओर ध्यान से देखा उसकी पेशानी पर बिन्दी लगी थी और मांग में सिन्दूर भरा था।'

—'बहिन ! तुम भी अगर मुझे मारना चाहो तो मार सकती हो, पर मैं काफी थका हुआ और भूखा हूं।'

—अच्छा दो मिनट बैठो। मैं तुम्हारे लिए खाना लाती हूं।' वह रसोई में गई। फिर खाना मेज पर सजाती हुई बोली—

—'बेटा ! तुम्हें बड़ी भूख लगी है। जल्दी से खा लो और यहां से भाग जाओ।'

मैंने जल्दी जल्दी खाना खाया और उसका शुक्रिया अदा करता हुआ सड़क पर निकल आया। अब पेट भरा था—और मैं मौत का सामना हिम्मत के साथ कर सकता था।

मैं सड़क पर आ ही पहुंचा था कि मैंने शोर की आवाज सुन कर पीछे देखा। और उसी मकान के सामने भीड़ थी जहां से मैं अभी खाना खाकर निकला था।

[illegible] मकान के [illegible]। पर मैं उन्हें देख [illegible] कि वे कौन थे। [illegible] खुद को लाचार [illegible]

अचानक बन्दूक की आवाज के साथ एक दर्दनाक चीख मेरे कानों के पर्दे चीरती हुई न जाने कहा खो गई।

मै अपने आपको सम्भाल नही पाया और बेहोश होकर वही गिर पड़ा। और जब होश आया तो मैंने देखा। कुछ पुलिस वाले मेरी उस बहिन की खून से तरबतर लाश को लारी म चढ़ा रहे हं।

मेरी आखो से आसुओ की बाढ़ उमड पडी और मैं फफक फफक कर रो पड़ा।



सूरज फिर निकलेगा

रात वाली घटना से वह बेहद परेशान है। बार बार चाहने पर भी वह उस घटना को अपने मस्तिष्क से निकाल नहीं पा रहा है। जैसे अगर वह चाहे तो दोस्तों के साथ पिकनिक का प्रोग्राम बना सकता है, उस्मान के साथ बैठ कर दारू पी सकता है और एक बुद्धिजीवी की तरह आदर्श बघार कर अमीर लोगों को गाली दे सकता है, और रात वाली घटना से अपने आपको मुक्त कर सकता है।

डाकिये की आवाज से उसके विचार तंतु टूट जाते है, वह उठकर डाक मे आई सामग्री को टेबल पर रख लेता है, और एक एक चिटठी को ध्यान से देखता है, पांच हिन्दी अंग्रेजी के साप्ताहिक अखबार, रचनाएं भिजवाने के लिए मुफ्तखोर सम्पादकों के तीन पोस्टकार्ड, एक अन्तर्देशीय पत्र उसकी एक पुरानी प्रेमिका का वह पत्र खोल कर नहीं पढता। उसे मालूम है इसमे लिजलिजी भावुकता से सने कुछ शब्द और फरमाइशों के अलावा कुछ नहीं होगा।

वह रुटिन मे चलते इस प्यार से अब ऊब गया है।

उसकी नजर अब घड़ी पर जा पहुंची है। दो बज रहे है, वह कमरे के ताला लगाकर बाहर आ जाता है, बाहर सड़क पर पहुंचते ही ठण्डी हवा का एक झोंका

उसके पूरे शरीर को स्पर्श कर गुजर जाता है, उसे अहसास होता है कि इस बार अक्तूबर के आरम्भ में ही सर्दी ने अपना असर दिखाना शुरू कर दिया है। स्टेशन मार्केट को पार कर वह चाँदपोल से गुजरता हुआ पुरानी बस्ती की तरफ निकल पड़ता है। आगे नाला आ जाता है, नाले के दोनों ओर झोपड़ियाँ बनी हैं और गन्दगी का इतना ढेर है कि साँस लेने पर दम घुटता है, वह जेब से रुमाल निकाल कर नाक पर लगा देता है। उसके कदम अब जल्दी जल्दी उठने लगते हैं।

उसे समझ में नहीं आ रहा है। इस गन्दगी के ढेर में जहाँ साँस लेने में भी दम घुटता है लोग किस तरह जिन्दगी बसर कर लेते हैं।

उसे सामने बस्ती के नव धन कुबेरों द्वारा बसायी गई आबादी की ऊँची ऊँची इमारतें दिखाई दे रही हैं। वह आश्चर्य चकित है। कल जो लोग फटे हाल थे किस तरह से कारों और बिल्डिंगों के मालिक बन गये, और नाले के आस पास बसी झोपड़ियों के लोग हाड़-तोड़ मेहनत के बावजूद भी गन्दगी और अन्धेरे के साम्राज्य तले दबे रहे।

इन्हीं झोपड़ियों के बीच किसी एक झोपड़ी में सुखिया रहती थी। सुखिया जो इस गन्दी बस्ती में कमल का एक फूल थी। आज हवालात में बन्द है, रात वाली घटना का केन्द्र बिन्दु सुखिया ही है। सुखिया जब नई नई इस बस्ती में आई थी तब पूरी बस्ती में तरह तरह की चर्चाओं और अफवाहों का बाजार गर्म हो गया था। कोई उसे आवारा व बदचलन समझता तो कोई अच्छे परिवार की महिला बताता। कोई उसे परित्यक्ता नारी बताता तो कोई भगोड़ी स्त्री कहता। गरज यह कि बस्ती में जितने मुँह थे उतनी ही बातें थीं।

इन्हीं चर्चाओं के आधार पर एक दिन मेरी सुखिया से मिलने की इच्छा हो गयी थी। बातों ही बातों में बस्ती में जन्म लेती इन अफवाहों का उससे बड़े बेमन से जिक्र किया था। मुझे लगा इन चर्चाओं से उसके मन को ठेस लगी है। पर मुझे यह अहसास जरूर हुआ कि वह बड़े हिम्मत वाली औरत है तथा किसी भी कठिनाई का बड़ी दिलेरी से मुकाबला कर सकती है। उसने बातों ही बातों में मुझे बताया कि वह गुजरात के एक गाँव की रहने वाली है। उसका आदमी दिन भर शहर में तांगा चलाता और शाम को घर लौट आता था। वे तीनों पति पत्नी और छोटा सा बच्चा शंकर, बस यह था उनका छोटा सा परिवार। वह बड़े आराम से दिन गुजार रहे थे कि एक दिन उनकी इस छोटी

की गृहस्थी मे तूफान आ गया। एक ट्रक दुर्घटना मे उसके पति की टाँग टूट गयी। इस तरह यह छोटा सा परिवार अनाथ और बे-सहारा हो गया। पर सुखिया बड़े जीवट वाली औरत थी। उसने हिम्मत नही हारी। पति का स्थान उसने ले लिया। वह दिन भर मेहनत मजदूरी करती और अपने परिवार का भरण पोषण करती। इसी तरह दिन गुजर रहे थे कि प्रकृति का भयंकर प्रकोप हो गया। एक दिन वह बच्चे को लेकर एक ऊँची पहाडी पर लकडिया बीनने गयी थी। पीछे से अचानक नदी का बाध टूट गया। देखते ही देखते सारा गाव पानी की भेंट चढ गया। इर्द-गिर्द का सारा वातावरण चीखो और चित्कारो से गूंज उठा। जो लोग बच सके वे पहाडियो पर चढ गये, शेष पानी के तेज बहाव के साथ बह गये। उसके अपाहिज पति ने भी जल समाधी ले ली। इस तरह उसकी बची-खुची दुनिया भी लुट गयी।

जब बाढ का पानी कम हुआ तो सुखिया ने वह गाव छोड दिया और इस बस्ती मे चली आई।

सुखिया की दर्द भरी दास्तान जान लेने के बाद वह उससे हार्दिक स्नेह रखने लगा था। पर उसका स्नेह फलहीन था। बंजर धरती पर बीज बिखेर देने जैसा। बस्ती मे सडक पर मिट्टी डालने से लेकर फसल काटने तक वह सभी काम करने लगी थी। अब वह पूरी तरह बस्ती की हो गई थी। शुरू शुरू मे उसके आने के वक्त जो अफवाहों का बाजार गर्म हुआ था, वह भी अब ठण्डा पड गया था। बस्ती के दूसरे लोगो की तरह सुखिया भी इज्जत की जिन्दगी जी रही थी और खुश थी।

लेकिन कुदरत को कुछ और ही मन्जूर था। बस्ती अकाल की चपेट मे आ गयी। बस्ती मे तरह-तरह की बीमारिया फैलने लगी। कुए बावडियो का पानी सूख गया, ऐसे मे भी सुखिया हारी नही। वह कोई न कोई काम तलाश लेती। इस तरह वह अपने और बेटे शंकर का पेट भरने का प्रयत्न करती। इस बीच वह खुद के काम से शहर चला गया था। आज सुबह जब लौटा तो बस्ती मे सन्नाटा था। रात की घटना पूरी बस्ती की छाती मे नासूर बन कर रिस रही थी। उसने रात की घटना के विषय मे जो सुना वह इस प्रकार था—

अकाल के कारण बस्ती मे भुखमरी फैली हुई थी। कही काम धन्धा नही था। लोग बेकार थे। छोटे बच्चे रोटी रोटी चिल्लाते थे। सुखिया की दशा भी खराब हो गयी थी। इधर शंकर बीमार पड गया। वह उसे लेकर डाक्टर के

पास गयी थी। तो उसने बाजार से लाने के लिए दवाइयों की पर्ची बनायी। सुखिया के पास जो थोड़ी बहुत जमा पूंजी थी वह सब बुखार की भेंट चढ़ चुकी थी। कई दिनों से आटा-दाल भी सेठ की दुकान से उधार पर आ रहा था। शमर को जिन्दा रखने की इच्छा मन में लिए वह सेठ की दुकान पर रुपया उधार लेने गयी।

सुखिया को अपनी दुकान की तरफ आते देखा तो सेठ की मिचमिची आंखों में चमक पैदा हो गयी, वह तपाक से बोला 'क्या चाहिए सुखिया'

'मुझे रुपया उधार चाहिए सेठ।' सुखिया ने कहा।

'क्या क्या करना है रुपये का ?

'मेरा बच्चा बीमार है सेठ, उसके लिये दवाई लानी है।'

'सो तो है पर रुपया के बदले में क्या लाई हो ?'

'सेठ मेरे पास बदले में देने को कुछ नहीं है, जैसे ही रुपया आयेगा मैं ब्याज सहित चुकता कर दूंगी।

'वाह जैसे रुपया कोई बरसात का पानी है जो बरसात बरसेगी और तुम मुझे लौटा दोगी।

'सेठ मुझे मालूम है रुपया बरसात का पानी नहीं पर मेहनत का पसीना जरूर है। मेहनत करके मैं तुम्हारी पाई पाई लौटा दूंगी।'

'अरे जा जा बड़ी आई पसीना टपकाने वाली।' मैं तुझे खूब जानता हूँ।

'पन्द्रह दिन से आटा दाल उधारी पर जा रहा है एक पैसा तो लौटाया नहीं आज तक। और रुपये लौटा देगी।'

सेठ तुम्हें रुपया उधार देना है कि नहीं ?' सुखिया की आवाज तेज थी।

'सुखिया उधार अक्कड़ से नहीं पिरेम से मिलता है। पिरेम से।' यह कह कर सेठ खी खी करके हँसने लगा था और उसकी आंखों में एक विशेष प्रकार की चमक पैदा हो गयी थी। सुखिया समझ गई थी कि सेठ उधार देना नहीं चाहता। वह चुपचाप वहां से लौट पड़ी। लौटते वक्त उसके पांव भारी हो गये थे। उसे अपने आप पर बड़ा गुस्सा आ रहा था कि वह क्यों उधार मांगने गयी थी।

जब वह घर पहुँची तब तक अन्धेरा गहराने लगा था। उसने ढिबरी जलाई। किवाड उटका, एक ओर कटे हुए पेड की तरह एक फटी पुरानी कथरी पर बिछ गयी।

कुछ देर सोते रहने के बाद उसे लगा कि कोई दरवाजा ठेल कर अन्दर आ गया है। उसने आखें खोल कर देखा तो दरवाजे के पास एक छाया खडी दिखाई दी। वह उठ कर खडी हो गयी ढिबरी के उजाम मे उसने देखा। सेठ दस-दस के कुछ नोट मुटठी मे भींचे उसकी ओर बढ रहा है और उसकी आखा मे शतान नाच रहा है।

'सेठ यहा क्या आए हो?' सुखिया न बिना सहमे हुये पूछा।

'रुपये देने।' सेठ ने जवाब दिया।

'दिन के उजाले मे क्या साप सूघ गया था जो अब रात के अन्धेरे मे आये हो?'

'रात के अन्धेरे मे इसलिये आया हू कि बदले मे तुमसे कुछ वसूल कर सकू।'

'सेठ जसे आये हो वस ही लौट जाओ वना बहुत बुरा हो जाएगा, मै हल्ला कर दू गी तो तुम पकडे जाओगे।'

'सुखिया, मैंने दरवाजे की कुण्डी चढादी है, अन्दर कोई नही आ सकता। और अगर कोई आ भी गया तो दरवाजे के बाहर खडे मेरे लठत उनका काम तमाम कर देंगे। फिर हल्ला करने म तुम्हारी बदनामी नही होगी क्या?'

'सेठ मेरी बदनामी की बात छोड अपनी खैर मना। और चुपचाप यहा से लौट जा नही तो मैं तुझे जान से मार दू गी।'

यह कह कर सुखिया ने उसे चले जाने का सकेत किया। पर सेठ वहा से हिला तक नही। उसन फूक मार कर ढिबरी बुझादी और फुर्ती से सुखिया को जा दबोचा व उसे नोचने खसोटने लगा। सुखिया ने सेठ को एक धक्का देकर जमीन पर गिरा दिया। इस बीच सुखिया न अपना सब्जी काटने वाला चाकू हाथ म उठा लिया और दहाड कर बोली— 'सेठ अब भी वक्त है लौट जा, मेरे हाथ मे चाकू है।'

सेठ बिना किसी परवाह के जिधर स आवाज आई थी, उधर बढने लगा। ज्योही उसने सुखिया को अपनी बाहो म लेने की कोशिश की चाकू सेठ की छाती म पवस्त हो गया। एक चीख रात के सन्नाटे को चीरती हुई पूरी बस्ती को जगा गई। सारे मौहल्ले के लोग इकटठे हो गये थे। लोगो ने देखा दवाइयां के

धुंध में फंसे लोग

गांव की पाठशाला के मास्टर दयाराम ने जब दक्षिण पट्टी में लोगों को बताया कि सरकार ने बंधुआ मजदूरी समाप्त कर दी है और आज से कोई बंधुआ नहीं रहा, आज से सभी बंधुआ आजाद हैं, अब कोई किसी से जबरदस्ती काम नहीं करवा सकता, काम के बदले हर आदमी को न्यूनतम मजदूरी देनी होगी। साथ ही मास्टरजी ने यह भी बताया कि सरकार बंधुआ मजदूरी से मुक्त लोगों को खेती करने और मकान बनाने के लिए मुफ्त जमीन और रुपया भी देगी, माताजी के चौतरे पर बैठे लगभग सभी लोगों के चेहरों पर आश्चर्य और अविश्वास का साम्राज्य छा गया। कुछ देर लोग एक दूसरे के मुंह ताकते रहे। फिर आपस में खुसुर फुसुर करने लगे। उन्हें विश्वास नहीं हो रहा था कि ऐसा कैसे हो सकता है।

पर कुछ बूढ़े लोग कह रहे थे कि जब मास्टर जी कह रहे हैं तो बात सच ही होगी। अगर पटवारी और तहसीलदार कहता तो बात कुछ और ही थी, पर मास्टरजी झूठ क्या बोलने लगे।

मास्टर दयाराम लोगों की खुसुर फुसुर को बड़े ध्यान से सुन रहे थे और उनके मनोभावों को समझ रहे थे। उन्होंने अपने खादी के जाकेट में से अखबार निकाला और पूरा समाचार लोगों को सुना दिया—'मुख्यमन्त्री ने मन्त्रिमण्डल की एक

आवश्यक बैठक बुलाकर बन्धुआ मजदूरी को खत्म करने का निर्णय लिया है।' यही समाचार आज के अखबार में विस्तार से छपा था। पूरा समाचार सुनने के बाद दक्षिण पट्टी के लोगों के शरीर में रक्त संचार की गति तेज हो गई। अब सबके चेहरों पर आश्चर्य और अविश्वास की जगह जग जीत लेने की खुशी फैली हुई थी।

दक्षिण पट्टी के आठ दस परिवार बन्धुआ मजदूरी के जाल में फंसे हुए थे। प्रत्येक परिवार का एक न एक सदस्य बंधुआ था। पर सबसे ज्यादा खुशी तुलछा को थी। क्योंकि दक्षिण पट्टी का यही एक परिवार ऐसा था जिसके दोनों के दोनों सदस्य बन्धुआ थे। यानी तुलछा और उसकी पत्नी बकू, दोनों ही ठाकुर राजेन्द्रसिंह के यहां बंधुआ थे। तुलछा दौड़ता भागता घर पहुंचा। घर का दरवाजा उढ़का था। पड़ोस की एक औरत ने बताया कि बकू पानी लेने गई है। वह हांफता कांपता कुंए की ओर दौड़ पड़ा। पूरा रास्ता सुनसान था। उसे दूर से ही कुंए पर एक औरत दिखाई दी। उसने वहीं से बकू को जोर से पुकारा।

बकू तुलछा की आवाज सुन कर हक्का बक्का रह गई। वह सोचने लगी। ऐसी क्या बात हो गयी कि तुलछा कुंए पर दौड़ा आ रहा है। जरूर कुछ अनर्थ हो गया है। वह भरा घड़ा सर पर रख कर तेज तेज कदमों से घर की ओर चल पड़ी। बकू ने देखा कि तुलछा दौड़ता भागता उसकी ओर चला आ रहा है। उसके मन में हजारों तरह के खटके जनम लेने लगे और उसके दिल की धड़कन तेज हो गई। जब वे दोनों नजदीक आये तो तुलछा ने पागलों की तरह बकू को अपनी बांहों में भर लिया और खुशी से नाचने लगा। बकू के सर से घड़ा गिरकर फूट गया। सारा पानी जमीन पर बिखर गया। घड़े के फूटने से उन दोनों के कपड़े भी गीले हो गये।

बकू तुलछा की बांहों की गिरफ्त में फंसी थी। उसकी देह लस्त पस्त हो गई थी पर आज उसे बड़ा अच्छा लग रहा था। हर रोज रात को जब तुलछा ठाकुर के यहां से दिन भर मेहनत करके लौटता तो आते ही कथरी पर बिछ जाता। कथरी पर दुबका पड़ा तुलछा उसे एक मेमने जैसा दिखाई देता था। और जब कभी रात्रि के अंतिम प्रहर तुलछा की बांहें उसे अपने घेरे में ले लेतीं तो बकू को लगता ये बांहें तुलछा की नहीं किसी बीमार आदमी की बांहें हैं। पर आज न जाने कहां से तुलछा की बांहों में हजार बांहों का बल आ गया था।

यह सब उसे बड़ा सुखद लग रहा था। आज उसके पांव धरती पर नहीं, कहीं और पड़ रहे थे। अर्द्ध चेतनावस्था में भी वह सोच रही थी– काश! पूरी उम्र तुलछा उसे अपनी बाहों में भर कर इसी तरह नाचता रहे।

तुलछा नाचते नाचते जब थक गया तो उसने अपनी गिरफ्त ढीली की। अब वे दोनो रास्ते के किनारे पड़े पत्थरों के एक ढेर पर बैठ गये और अपनी सांसों पर काबू पाने की कोशिश करने लगे।

—बहू जानती है, आज क्या हुआ? तुलछा ने कहा।

—क्या हुआ?

—हम आजाद हो गये।

—क्या कह रहा है रे तुलछा! ठीक से समझा। मेरी तो समझ में कुछ नहीं आ रहा।

—अरे पगली! आज हम आजाद हो गये। ठाकुर की गुलामी से आजाद! अब आज से न ठाकुर अपना मालिक है न हम उसके चाकर।

—यह क्या बक रहा है रे तुलछा। आज क्या दिन में ही दारू चढ़ा ली तूने।

—हां आज दिन में ही दारू चढ़ा ली मैंने अब बोल तू, क्या करना है? तुलछा के स्वर में आक्रोश था।

—अरे नाराज क्यों होता है रे। जरा ठीक से समझा ना। मेरी तो समझ में बिल्कुल ही नहीं आता।

—अरे मूरख! सरकार माई बाप ने कानून बनाकर हमें बंधुआ मजदूरी से आजाद कर दिया। मास्टर साब ने अखबार में पढ़ कर पूरी पट्टी के लोगों को सुनाया। और यह भी कहा कि सरकार हमको खेतों के लिए जमीन और रुपया भी देगी।

—क्या यह सच है रे तुलछा?

—क्या? तुझे बिस्वास नहीं होता।

—बिस्वास क्यों नहीं होता रे। बिस्वास भी होता, पर वो ठाकुर का बच्चा हमको कच्चा चबा जाएगा रे।

—कैसे चबा जाएगा? कानून हमारी रच्छा करेगा। समझी पगली।

—पर वो बाबा ने जो पांच सौ रुपिया ठाकुर से उधार लिया था, उसका क्या होगा?

—कुच्छ नहीं होगा उसका। कुच्छ नही। सरकार ने सब कर्ज माफ कर दिया। तुलछा ने उसे आश्वस्त करने के लिए कहा।

—पर ठाकुर मानेगा क्या? कबू ने शंका प्रकट की।

—अरे, ठाकुर की ऐसी की तैसी। स्साला! आये मेरे सामने तो काट कर फेंक दूं।

तुलछा की बात सुन कर कबू हंसने लगी। कबू को हंसते हुए देख कर उसकी भी हंसी फूट गई।

जब वे घर पहुंचे तो अन्धेरा गहराने लगा था।

कबू रोटियां पकाने बैठ गई।

जब वे खा चुके तो बाहर किसी ने आवाज दी। तुलछा ने बाहर निकल कर देखा तो ठाकुर का एक आदमी तेल पिलाई लाठी कंधे पर रखे खड़ा था।

—क्या बात है? तुलछा ने पूछा।

—ठाकुर ने बुलाया है। अभी। लठैत ने जवाब दिया।

—क्या?

—काम है।

—मैं नहीं आता। कह देना ठाकुर से। अब मैं ठाकुर का गुलाम नहीं। अब मैं आजाद हूं। तुलछा ने क्रोध से फुफकारते हुए कहा।

तुलछा की बात सुनकर लठैत की भौंहें तन गईं। पर उसने अपने को संभालते हुए कहा—

—तुलछा तू आजाद हो गया है, यह तो ठाकुर भी जानते हैं पर तुझे पिछले हिसाब किताब के लिये बुलाया है।

—कैसा हिसाब किताब। मुझ में कोई हिसाब किताब नहीं ठाकुर का। बोल देना उसको, सरकार ने पिछला सारा कर्ज माफ कर दिया है। मास्टरजी अखबार में पढ़ कर सुना रहे थे।

—तो तू मास्टरजी के चक्कर में है। सीधी तरह चलता है कि लगाऊं लट्ठ? उसका यह कहना था कि तुलछा ने टूटी हुई दीवार से एक ईंट खींच कर दे

मारी। लठन का सर फूट गया। लाठी हाथ से छूट कर दूर जा गिरी और वह चीखता चिल्लाता उल्टे पाव ठाकुर पट्टी की ओर चल पडा। लठैत के चले जाने के बाद तुलछा पर सकता सा तारी हो गया। उसने यह नही सोचा था कि आज का आज खून-खराबा हो जाएगा। लेकिन अगर वह ईट नही चलाता तो लठत उस पर अवश्य वार करता। ईट चला कर उसने अच्छा ही किया। पर उसे अब अपनी और ककू की जान खतरे मे लगने लगी। उसने ककू से कहा—

—अब हमारे लिये यहा रहना मौत को न्यौता देना है।

—फिर क्या करे तुलछा।

—यहा से निकल चलें।

—क्यो ?

—क्योकि यह ठाकुर अपनी नीचता से बाज नही आयेगा और सरकार माई-बाप तक हमारी गुहार पहुचे उसके पहले ही यह हम जान से मार डालेगा। इसलिए हम इस गाव को छोड देना चाहिये। तुलछा ने ककू को समझाया।

—अब हम जायेंगे कहा ?

—अब हम यहा से शहर मे जायेंगे और मेहनत मजूरी करके अपना पेट भरेंगे।

व दोनो रात के अन्धेरे म, आखो मे आसू लिये अपने गाव से निकल पडे।

सुबह जब गाव वाले जगे तो उन्होने देखा कि पुलिस के सिपाही गाव मे फले हुए हैं और दक्षिण पट्टी धुध मे डूबी हुई है। सिपाही दक्षिण पट्टी के एक एक घर की तलाशी ले रहे थे। पूरे गाव मे यह खबर आग की तरह फैल गई थी कि तुलछा ने रात मास्टर दयाराम का कत्ल कर दिया और उनका घर लूट कर भाग गया।

दक्षिण पट्टी के लोग अच्छी तरह से जानते थे कि मास्टर दयाराम का कातिल कौन है, पर वे भयाक्रान्त और मौन थे और भय के कारण पीपल के सूखे पत्ते की तरह काप रहे थे।

□

नयी सुबह

रात के नौ बजे हैं। अंधेरा कितना गहरा गया है। ऐसा लगता है जैसे बहुत रात हो गई। दरअसल सर्दी की रातें होती ही ऐसी हैं। सूर्यास्त हुआ नहीं कि अंधेरा अपनी चादर फैलाने लगता है।

और इस कस्बे का तो यह हाल है कि आठ बजते बजते बाजार बन्द। व्यावसायिक कस्बे की यही तो समस्या है। यार दोस्त भी जल्दी-से जल्दी घर पहुंचकर अपने अपने गर्म बिस्तरों में दुबक जाना चाहते हैं। अब मेरे जैसे अकेले और बाहरी लोग जायें-तो जायें कहां।

बस मैं अपने घर की ओर रवाना हो गया हूं। पर सोचता हूं इतना जल्द घर पहुंचकर भी करूंगा क्या? आज सर्दी बहुत तेज है। लगता है मौसम की सबसे तेज सर्दी आज ही पड़ने वाली है। सम्भव है बर्फ भी गिरे। पुराने लोग अक्सर चर्चा करते हैं। एक बार इतनी भयंकर बर्फ गिरी कि पूरे कस्बे में बर्फ ही-बर्फ हो गई। लोग मकानों में बंद होकर रह गये। तीन दिन बाद रास्तों से बर्फ हटाई गई। तब जाकर कहीं आवागमन शुरू हुआ।

सर्दी से बचने के लिए मैंने मफलर को गले और सिर से कसकर बांध लिया है और हाथों को कोट की दोनों जेबों में डाल दिया है। देखता हूं अब सर्दी मुझ तक किस रास्ते से पहुचती है।

धीरे धीरे टहलता मैं गोल मार्केट तक आ पहुचा हू। पूरे मार्केट में सन्नाटा पसरा पड़ा है। कहीं कोई हलचल नहीं। आज कुत्ते भी गायब है। वर्ना इतनी रात गये कुत्तों को सलामी दिये बिना मार्केट से गुजरना कोई आसान काम नहीं।

यहा से मेरा घर एक फर्लांग दूर है।

गोल मार्केट पहुचने पर लगता है जैसे घर पहुंच गये। उसी तरह जिस तरह दिल्ली या जयपुर से लौटते हुए बस जैसे ही गामती चौराहे पर पहुचती है तो लगता है— घर आ गये।

गोल मार्केट इस कस्बे की शान है। कहते है जिसने इस गोल मार्केट का निर्माण कराया उसने देश के एक प्रसिद्ध डिजाइनर से इसका नक्शा बनवाया था।

जैसे ही मैं गोल मार्केट को पार कर अपने घर जाने वाली सड़क पर पहुचा कि पीछे से एक आवाज आई— 'सुनिये साहब!' मैं आवाज को अनसुना कर अपनी मस्ती में चलता रहा कि इस वक्त मुझे पुकारने वाला यहा कौन हो सकता है। लेकिन वही आवाज मुझे काफी निकट से फिर सुनाई दी।

मैंने मुड़कर देखा तो सामने एक अपरिचित सा आदमी नमस्ते की मुद्रा में खड़ा था। मैंने उसे ऊपर से नीचे तक देखा। कपड़ों से लगा शायद कोई ड्राइवर है। मैंने उससे कहा— 'कहिये, पहचाना नहीं आपको।'

उसने एक जोरदार ठहाका लगाया फिर बोला।

'आप कैसे पहचानेंगे साहब! यह साला वक्त ही मारू है। कोई किसी को नहीं पहचानता। हर एक को अपनी पहचान बनानी पड़ती है। लगता है आप यहां नये हैं? बाकी साला पीटर को इधर कौन नहीं जानता?'

'तुमने ठीक कहा पीटर! वाकई मैं यहा नया हू' मैंने कहा।

'तब तो मजा आ गया साहब, खूब जमेगी जब मिल बैठेंगे दीवाने दो। चलिये, चलिये साहब होटल में चलकर बैठते हैं", उसने बड़े उत्साह से कहा।

पीटर पहले मुझे बावला या दीवाना लगा था। पर उसकी बेलौस बात ने मुझे खरीद लिया। मुझे घर पहुंचने की जल्दी नहीं थी। फिर पीटर के व्यक्तित्व ने मुझे काफी प्रभावित किया था। इसलिए मैं उसके साथ चल दिया। मैंने सोचा जाड़े की यह दांत किटकिटा देने वाली रात शायद पीटर के साथ गप शप मे बीत जाय।

होटल के नाम पर पीटर मुझे जहां लेकर गया वह एक ढाबा था, जो कस्बे से कुछ दूरी पर बना था। ढाबे के बाहर कई खाटें पड़ी थीं। और उन खाटों पर ट्रक ड्राइवर और क्लीनर बैठे खाना खा रहे थे या फिर गपबाजी कर रहे थे।

एक खाली खाट देखकर हम उस पर बैठ गये। वह खाट भट्टी के नजदीक थी इसलिए शरीर को एक हद तक सर्दी से निजात मिल गयी थी।

मैं मन ही मन पीटर को धन्यवाद दे रहा था।

पीटर मेरे काफी मना करने के बावजूद भी नहीं माना और उसने मेरे लिए भी खाना मंगवा लिया।

खाना खा चुकने के बाद पीटर ने मेरी ओर देखा और कहा।

उसके दांत सफेद मोतियों की मानिन्द चमक रहे थे। और उसकी आंखों में एक विशेष प्रकार की चमक थी।

ऐसी चमक मैंने किसी की आंखों में कभी नहीं देखी थी।

अब पीटर काफी खुश दिख रहा था। और मुंह से कोई अंग्रेजी धुन बजा रहा था। उसने जेब से एक सिगरेट निकाली और उसे जलाकर कश खींचने लगा।

मैंने कहा— पीटर, आज सर्दी बहुत तेज है। घर चला जाय क्या सबेरा होगा नहीं?

वह बोला— शायद आज सबेरा नहीं आयेगी। आज मैं बहुत खुश हूं। मेरी खुशी में आपने साथ दिया आपका बहुत-बहुत शुक्रिया। आज तो मेरे लिए जश्न का दिन है।

'जश्न की रात ! वह कैसे !' मैंने जानना चाहा।

उसने भरी आंखों में झांका। जैसे कुछ पढ रहा हो। वह मुस्कराया और कहने लगा—

'मैं धीगडा साहब के यहां ड्राइवर था। सप्ताह भर पहले वहां से मुझे नौकरी से निकाल दिया। धीगडा साहब बड़े अच्छे आदमी थे। उन्होंने मुझे कभी अनिफ से बे नहीं कहा। पर उनकी औलाद साली बड़ी फटीचर निकली साहब ! अच्छा हुआ समय रहते बेचारे चले गये वरना ये उनके मुंह पर किसी दिन जरूर झाड मार देते।'

'लेकिन पीटर तुम्हें निकाला क्यों ?' मैंने पूछा।

'क्या बताऊं साहब, बहुत गड़बड़ झाला करते थे उनके लड़के। शराब, गांजा, चरस और न जाने क्या क्या। मैंने उन्हें समझाने की कोशिश की तो उन्होंने मुझे निकाल बाहर किया। मैं दस साल से उनकी गाड़ी चला रहा हूं और एक भी छोटे से छोटा एक्सीडेंट नहीं किया। लेकिन अब मैं चाहता हूं, ईश्वर करे उनकी गाड़ी का एक्सीडेन्ट हो जाय और सब मर जायें। कम से कम धीगडा साहब की आत्मा को तो शान्ति मिलेगी। उनके नाम पर कलंक नहीं लगेगा और लोगों को भी नशे से मुक्ति मिलेगी। उसने कहा और एक गहरी निश्वास छोड़ी।

'धीगडा साहब अच्छा रखते थे तुम्हें पीटर ?' मैंने उससे पूछा।

'अच्छा ही नहीं बहुत अच्छा रखते थे धीगडा साहब मुझे।' कहते थे— अरे पीटर, तेरे आने से अपना बिजनेस जम गया। बहुत खुश रहते थे मुझसे। शादी त्यौहार पर इनाम इकराम भी देते थे। उन्होंने खुश होकर मेरी पगार तीन सौ रुपये कर दी थी। बड़ा सस्ता जमाना था साहब। खूब मस्ती से रहता था। लेकिन अब दस रुपये रोज में गुजारा नहीं होता। आप तो जानते ही हैं मस्टररोल पर काम करने वाले मजदूर को भी सरकार चौदह रुपये रोज देती है। अच्छा हुआ उन नालायकों ने मुझे निकाल दिया वरना मैं खुद छोड़ देता एक दिन।'

पता ही नहीं चला पीटर की गपशप में और काफी रात गुजर गयी। सर्दी तेज हो गयी। सड़कें खाली हो गयीं। कई ट्रक रवाना हो चुके थे और कुछ रवाना होने की तैयारी में थे। हम खाट से उतरकर भट्टी के पास आकर बैठ गये और शरीर सेंकने लगे।

कुछ देर माहौल में चुप्पी छाई रही। फिर मैंने जिज्ञासा व्यक्त की—'लेकिन पीटर अब क्या करोगे तुम?'

'ड्राइवरी करूंगा साहब, ड्राइवरी! आपको यह सुनकर खुशी होगी कि मुझे आज ही अडवाया साहब ने अपनी नई गाड़ी पर ड्राइवर रख लिया है। पगार भी पूरे पांच सौ रुपय महीना। एडवांस भी दिया दो सौ रुपया। साथ ही कहा, पीटर खुश हो ना। अगर कम हो तो मुझे बोल देना। राजा आदमी है अडवाया साहब, ईश्वर उनका भला करे।'

पीटर की बात सुनकर मुझे बहुत खुशी हुई और सुकून मिला कि वह बेकार नहीं है जैसा कि मैं कुछ देर पहले उसके बारे में सोच रहा था।

पीटर जैसे नेक इन्सान के लिए मेरे अन्दर एक विशेष आत्मीयता पैदा हुई। मैंने मन ही मन ईश्वर से प्रार्थना की कि पीटर हमेशा खुश रहे। मैंने पीटर की ओर देखा तथा मुस्कराया।

पीटर के चेहरे पर एक लम्बी मुस्कान थी। उसकी आंखों में खुशी के आंसू डबडबा रहे थे। दूर पूरब दिशा में आकाश लाल हो गया था। एक खूबसूरत नयी सुबह धरती पर उतरने की तैयारी कर रही थी।



फैसला

गाव म चहल पहल शुरू हो गयी थी।

सवेरे का सुन सूरज पूरब दिशा की बडी पहाडी की चोटी पर आ टिका था। नुक्कड की दो चार दुकाना के साथ साथ जग्गू की होटल के भी पट खुल चुके थे। वैसे पौ फटने के बहुत पहले ही जग्गू की होटल पर जमावडा शुरू हो जाता है, पर आज बहुत देर बाद जग्गू न दुकान खोली थी।

नित्य की तरह जग्गू का चहरा आज खिला हुआ नही था। शायद रात की घटना का प्रभाव अभी तक उसके मन मस्तिष्क पर शेष था। फिर भी वह अपने ग्राहको का पूरा ध्यान रख रहा था और आने जाने वालो के सवालो के जवाब द रहा था।

इस बार बारिश बहुत अच्छी हुइ थी। मक्का की फसल पूरे उठान पर थी। अभी फसल के कटन म देर थी। इसलिए जग्गू की होटल गाव वाला का खास अड्डा बनी हुई थी। इस वक्त भी दस-बारह ग्राहक जमे हुए थे जिनम स सात आठ दुकान क अन्दर बठे चाय सुडक रहे थे और शेष बाहर की टूटी बेंचो पर डटे थ। य लाग चाय नाव पी चुके थे और अब बठे-बठे गप्प आजा कर रहे थे या बीडी फूक रहे थे।

जग्गू की यह होटल गाव की आबादी के पिछडे इलाके मे स्थित थी। जहा अधिकतर गरीब लोगो के घर थे, जिनमे चमार, रेगर और बुनकर लोग रहते थे। ये सभी लोग खेतीहर मजदूर थे और ठाकुरो की भूमि पर मजदूरी करके अपना पेट पालते थे। यहा की आबादी पूरे गाव की आबादी का एक तिहाई भाग था और पिछडे लोगो का यह इलाका चमार टोला के नाम से मशहूर था।

नन्दू काका को इधर आते देख कर जग्गू ने छोटी केतली मे पानी उबलने के लिये रखा और उसमे दो चम्मच चाय और शक्कर मिलाकर बिना दूध की एक गिलास कडक चाय तयार की। नन्दू काका इस इलाके के मुखिया थे और पूरा चमरोटा उनका आदर करता था।

जग्गू के हाथ से चाय का गिलास थामते हुवे नन्दू काका ने पूछ ही लिया—
'क्यारे जगुवा कल सन्ध्या को काहे का शोरगुल हुआ रहा हिया' बात पूछ कर काका ने जग्गू के चेहरे पर अपनी निगाह टिका दी।

जगुवा सुन सुन। वह कुछ बोले उसके पहले ही बोल उठा किसना रेगर 'काका ठाकुर रघुवीर के लाड लपाट चढ आये थे जगुवा पर और कहत रहे कि सारे होटल चलानी हो तो सीधी तरह चलो नही तो एक दिन आग मे झुलस देंगे। यह सब देख सुन जगुवा को जसे काठ मार गया। एक बोल तक नही फूटा मुह से, तब बोला रमिया— 'काहे हो बाबू साहब क्या धमकाय रहे हो इस बचारे को। इसका दोष तो बताओ? इस पर बिफर उठा था ठाकुर का बडका लाडा— 'साला अब दोष भी हमी को बताना पडेगा क्या। तुम सब मादर हो। मै तुम से एक एक से निपट लूगा। दिन रात इस होटल मे इकट्ठे होकर पोलीटिक्स खेलत हो और हमसे पूछत हो कि दोष क्या है।' भला काका अब तुम्ही बताओ क्या हम चाय भी नही पीयें। ये ठाकुर लोग तो दारू की बोतले खाली कर दे और हम चाय पीने इकट्ठे हो तो वह इनकू पालीटिक्स लगे।

कुछ क्षण मौन रहता है फिर इस चुप्पी को तोडता है जग्गू का छोटा भाई रामेश्वर। जिसे गाव वाले प्यार से रामेसर कहते है। रामेसर हृष्ट पुष्ट और एक गुस्सैल नवयुवक है। वह आजकल शहर के कालेज मे पढ रहा है। वह कहता है— 'काका भइया का कसूर ही क्या है, बस उन्होने यही तो कहा था कि इस बार सरपच चमार टोले का आदमी बनाना चाहिये बस, इतनी सी बात पर

ठाकुर टाने म श्राग लग गयी। तुम ही बताम्रो काका क्या चमार टोने का श्रादमी सरपच नहीं बन सकता ?' 'क्या नही बन सके ह रे रामसरवा। जरूर बन सक ह। पर ठाकुर लोगन से बैर कौन मोल ले।' बूढे काका न अनुभव के श्राधार पर कहा।

जग्गू की हाटल के श्रास पास काफी भीड इक्ट्ठी हो गयी थी। कुछ लोग बठे थे। कुछ खडे थे। दो चार औरतें भी जो शायद मेला की श्रोर जा रही थी रुक कर बात चीत सुनने लग गयी थी। एक मीटिंग जसा दृश्य उपस्थित हो गया था। 'इसम बर माल लेन की क्या बात ह काका।' जस्से सुथार ने बात आगे बढायी—'यह तो श्रपन श्रधिकार की बात है। कानून कहता है कि हमारे देस माय लोकतन्तर है। हर श्रादमी सरपन्च का बोट लैने खडा हो सकता है। फेर चमार टाने का श्रादमी सरपच क्यू नहीं बन सकता ?

'तुम्हारी बात ठीक है। देस माय कानून है लोकतन्तर है।' काका ने कहा—'पर तुम नहीं जानते इस गाव तक दम का कानून नही पहुचा। हिया तो श्रभी ठाकुरो का ही राज है। हमकू उनकी मरजी के हिसाब से चलना पडता है श्रगर हम श्रपनी मरजी से चलेंगे तो वे इस गाव म हमारा रहना दुभर कर देंगे। वे कहत ह कि हमने सरपच के चुनाव मे श्रपना श्रादमी खडा किया तो वे श्रपन कुश्रा स पानी भरना बन्द कर देंग। श्रब तक यही हुश्रा है।

'श्रब यह नही होगा काका! श्रगर व हम पानी नहीं भरने देंगे तो फिर इस साल फसल का बटवारा भी नहीं होगा। वे हम पानी नही देंगे हम उन्हे श्रनाज नही देंगे।' एक श्रौर कालेजियट लडका भीड में से बोल उठा।

'तुम श्रनाज कईस नही दोगे। जमीन तो ठाकुरा की है। काका ने कहा। 'जमीन ठाकुरा की नही काका जमीन हमारी है। क्योंकि बरसा से हम उस पर श्रपना खून पसीना एक करने श्रा रहे ह।' रामेसर चीख उठा। 'यह झगडा बढाने वाली बात ह रे रामसर। इससे तो सगरस बढेगा। काका ने कहा।

'इस बार सरपच हमार टोल का श्रादमी बनेगा काका। चाहे सघर्ष बढे या घटे।' एक साथ कई युवको की श्रावाजे गूज उठी। श्रच्छी बात है रे भय्या तुम लोगन ने यही सोच लिया है तो ठीक ह। तुम चाहत हो कि चमार टाने के लोगन को ठाकुर के श्रादमी लठियन से पीटें तो मैं भला क्या कर सकता हू।' बड निराश स्वर म काका ने कहा।

'याको लाठिया और बन्दूको से कायर लोग डरते ह फिर हमारे हाथ मे कोई चूडिया नही है। यह फैसला तो एक दिन होना ही ह। फिर वह आज ही क्यो न हो जाय। आखिर कब तक कुछ मुट्ठी भर लोग हमे लाठियो और बदूको के बल पर अपनी मर्जी के अनुसार हाकते रहगे। अब हम ईंट का जवाब पत्थर से देंगे।' रामेसर ने दहाडते हुए कहा।

'हा हम ईंट का जवाब पत्थर स देंगे।' वातावरण म एक साथ कई स्वर फूट पडे।

सूरज का लाल लाल गोला आकाश क मध्य म आकर रुक गया था और उसकी तेज किरणें धरती पर सीधी पड रही थी। सूय के तेज प्रकाश म चमार टोला के लोगो के चेहरे दमक रहे थे। उनके अन्दर एक नये सकल्प के उत्साह का समन्दर ठाठें मार रहा था। उधर ठाकुरो के शान्त साम्राज्य मे आग लग गयी थी। ठाकुरो क हौसले पस्त थ। ठाकुर टोला ईर्ष्या और वैमनस्य की आग म जल रहा था और वहा म अग्नि की भयानक लपटें उठ रही थी।



पुजारिन

हम तीन दिन से पचास लाख की लागत से बनी एक सरकारी इमारत में ठहरे हुए थे।

दस बजे तक वह नहा धोकर तैयार हो गयी थी। नहाने के बाद उसका रूप निखर गया था और शरीर की त्वचा में तनाव आ गया था।

मैंने उसकी आंखों में झांका। मुझे उसकी नीली झील में असंख्य किश्तियां तैरती हुई दिखाई दीं। चौकीदार चाय के लिए दो बार पूछ गया था पर आज दोनों बार उसने मना कर दिया।

—चाय नहीं पीनी है क्या आज ? मैंने पूछा।

—नहीं। उसने जवाब दिया।

—क्यों ?

—तुम्हें नहीं मालूम। आज के दिन पूजा से पहले मैं अपने मुंह में कुछ नहीं डालती।

—पर आज डाल लो। मैंने उसके सामने अपना सुझाव रखा।

—क्या ?

—इसलिए कि अब मैं इतने बड़े शहर में तुम्हारे लिए अखबार कहां से खोज कर लाऊं।

—तुम्हें खोजने की जरूरत नहीं है।

—फिर क्या दिन भर भूखी ही रहोगी।

—हां।

—मेरे साथ यह नहीं चलेगा।

—तुम खाना खा लेना।

—मैंने कहा न मेरे साथ यह सब नहीं चलेगा।

—चलेगा चलेगा और चलेगा, गुस्से के कारण उसके गोरे चेहरे पर आग की लपटें लपलपाने लगीं।

—मेरे साथ तुम्हें यह सब छोड़ना पड़ेगा रानी।

—सुनो अनिल। मैं सब कुछ छोड़ सकती हूं पर अपना व्रत और पूजा-पाठ नहीं छोड़ सकती।

—देखो, खाने पीने के मामले में जिद नहीं किया करते।

—इसमें कौनसी जिद है ?

—क्या यह जरूरी है कि सफर में भी व्रत और पूजा पाठ किया जाये ?

—यह कौनसी किताब में लिखा है कि सफर में व्रत और पूजा पाठ बन्द है।

—तुमसे बहस फिजूल है।

—फिर करते क्या हो।

मैं चुप लगाकर बैठ गया और उसके आगे के कार्यक्रम का इंतजार करने लगा।

वह सज धज कर तैयार बैठी थी फिर भी उसने एक बार और आइने में झांका और अपने चेहरे को परखा फिर आदेश के स्वर में बोली—

—चलो, अब बाहर निकलते हैं।

—कहां ?

—उठो तो सही।

मैं ग्रादेश पाकर एक मासूम बच्चे की तरह कमरे से बाहर ग्रा गया। उसने दरवाजा बन्द कर कमरे के ताला लगा दिया ग्रौर चाबी को अपने पस म रख कर खट-खट सीढ़िया उतरने लगी।

अब हम सड़क पर थे।

उसने इधर उधर नजरें फेरी जसे कुछ तलाश रही हो मैं उसका मतलब समझ रहा था ग्रौर मन ही मन झल्ला रहा था।

उसन जाते हुए एक ग्रादमी को रोक लिया ग्रौर पूछा—

—यहा ग्रास पास कोई मन्दिर ह ?

—हा ह, उस ग्रादमी न जवाब दिया।

—कहा ?

—वो जो सामने लाल रग की बिल्डिग दिखाई दे रही है उसके पीछे एक छोटा सा मन्दिर ह।

—किसका ह वह मन्दिर ?

—यह तो पता नहीं। पर रोज म उधर से गुजरता हू इसलिए मुझे मालूम है। उस अपरिचित ग्रादमी ने कहा।

—अच्छा अच्छा धन्यवाद।

धन्यवाद देन म वह काफी मुक्त हस्त है। कुछ देर वह सोचती रही फिर मुझस बाली—

—चलो उधर चलते हैं।

—किधर ? मैंन जानना चाहा।

—उस लाल बिल्डिग क पीछे।

—जान से फायदा ?

—तुम हमेशा फायदा ग्रौर नुकसान ही देखते रहोगे या मै कहूगी वसा करोगे। उसके चेहरे की रगत फिर बदलन लगी थी।

—न जाने किसका मन्दिर होगा, मैंन टालन के अन्दाज मे कहा।

—तुम्हे उसस क्या ? न सही मन्दिर थोडा घूमना ही हो जायगा।

—फिजूल घूमने में क्या रखा है ?

—फिर तुम यही रुको, मैं ही हो आती हूं। उसकी आवाज में तल्खी थी और चेहरा गुस्से से तमतमा गया था।

—अरे बाबा। गुस्सा क्या होती हो, चलो मैं भी चलता हूं। कुछ ही देर चलने के बाद मंदिर हमारे सामने था। मंदिर पर दृष्टि पड़ते ही उसके चेहरे पर खुशी की लहर दौड़ गई। वही पास की दुकान से उसने एक नारियल खरीदा फिर अगरबत्ती की पुड़िया, फिर खुश खुश मन्दिर में प्रवेश किया। पूरा का पूरा नारियल चढ़ाने के बाद उसने अगरबत्ती जलाई और कुछ देर इधर उधर घूम फिर कर वह मन्दिर का निरीक्षण करती रही, फिर बाहर आ गई।

अब उसकी आंखों में विजय की चमक थी और मैं अपने आपको शर्मिन्दा महसूस कर रहा था। कुछ देर हम चुपचाप चलते रहे, वह अपने आप में इतनी मगन थी कि जिधर उसका मुंह था उधर ही चली जा रही थी, बिना बोले, बिना थके। कोई और दिन रहा होता तो वह कह देती जल्दी से कोई टेम्पो वगैरा कर लो अब हमसे नहीं चला जाता। पर आज वह इतनी ज्यादा खुश थी मानो किसी विजय अभियान से लौटी हो। जब काफी वक्त गुजर जाने के बावजूद भी उसके मुंह से कुछ नहीं फूटा तो मुझे ही बोलना पड़ा—

—क्या हम इसी तरह चलते रहेंगे ?

—हां अभी नहीं, जैसे वह नींद से जगी हो।

—फिर ?

—अब हम खाना खा लें।

उसका यह प्रस्ताव मुझे बेहद पसंद आया। मेरी आठ बजे खाने की आदत है, और इस वक्त दिन का एक बज रहा था। भूख और पैदल चलने के कारण मेरी हालत पतली हो रही थी। वह भी इस बात को अच्छी तरह जानती थी कि मैं भूख एक मिनट भी बर्दाश्त नहीं कर सकता, जबकि वह तीन तीन दिन तक भूखी रह सकती है।

हम एक होटल में जा पहुंचे। वह साफ पूड़ी की होटल थी। दो सब्जी, गोभी मटर और बैंगन भट्टे। उसे बैंगन भट्टे पसन्द नहीं। मेरी तरह वह भी खाने के मामले में बड़ी चट्टी है। मैंने एक प्लेट दही और मंगवा लिया। दही और

प्याज तथा टमाटर उसे खाने के साथ मिल जाय तो उसे ऐसा लगता है मानो स्वर्ग मिल गया है।

—तुम्हें ईश्वर में विश्वास है? खाना खाते-खाते वह मुझसे पूछ बैठती है।

—नहीं!

—क्यों?

—इसलिए कि मैं नहीं मानता कि ईश्वर नाम की कोई चीज भी होती है।

—क्यों नहीं मानते?

—यह मेरी मर्जी है।

—तुमने अभी देखा नहीं कि ईश्वर भी होता है?

—कहां?

—मन्दिर में।

—हां मन्दिर में हां हां

—हां हां क्या। बात को हवा में मत उड़ाओ अनिल। तुम तो कह रहे थे न इतने बड़े शहर में कहां से मैं तुम्हारे लिए भगवान को खोज कर लाऊं।

—हां, कह रहा था।

—तुम्हें तो खोजने नहीं जाना पड़ा न, सड़क पर आते ही भगवान मिल गए। वह चहक उठी।

—तो मैं क्या करूं, मैंने झिड़क दिया उसे।

—क्या अब भी तुम्हारे मन में ईश्वर के प्रति आस्था नहीं जगी?

—कभी जगेगी भी नहीं।

—क्यों?

—इसलिए कि झूठे, मक्कार और कमजोर मन के लोग अपने स्वार्थों की पूर्ति के लिए ईश्वर और खुदा रूपी हथियार का इस्तेमाल करते हैं।

—यह झूठ है।

—यह शत प्रतिशत सच है।

—तुम्हें मालूम है सच और झूठ में दूध और पानी जितना अन्तर है।

—मुझे मालूम है।

—क्या तुम्हें यह भी मालूम है कि मैं तुम्हें ईश्वर की तरह पूजती हूं। बोलते बोलते उसकी आवाज भर्रा गई थी और गला रुंध गया था।

—यह बात हर हिन्दुस्तानी औरत कहती है और जब तक उसे इस मूर्खतापूर्ण संस्कार से मुक्ति नहीं मिलती वह दुनिया के किसी भी देश की स्त्री के साथ सर उठा कर नहीं चल सकती।

यह बात कह कर मैंने उसकी ओर देखा, लगा उसकी झील जैसी गहरी आंखों में तूफान बरपा हो गया है और उसकी वजह से कुछ आबदार मोती उसके तुनाईदार गालों पर बिखर गये हैं।



एक जीनियस का अंत

और आज गजाधर चल बसा।

गजाधर को आप नही जानते। मैं भी नही जानता था गजाधर को लेकिन आप यह तो जानते ही हैं कि इस लम्बी चौडी दुनिया मे कुछ ऐसे लोग भी होते हैं जो एक दूसरे का आपस म परिचय करा कर अपने बडप्पन का अहसास कराते रहते हैं।

गजाधर की कहानी मैं आपको सुनाऊ इसके पीछे भी परिचय का वही सिलसिला है। दरअसल इसका सम्पूर्ण श्रेय कमल को है। कमल गजाधर का मित्र है और मेरा परिचित।

कमल से मैं प्रतिदिन मिलता हू, फिर भी मैं उसको अपना मित्र नही मानता, क्योंकि अगर मै उसको अपना मित्र मानने लगा तब मैं भी गजाधर वाली गलती दोहराऊगा। फिर कमल मेरे बारे मे भी लोगो को अनाप शनाप बताता फिरेगा। और फिर मुझ पर भी कोई कहानी लिखने बैठ जाएगा।

ऐसा नही है कि अपने बारे मे किसी के कहानी लिखने से मैं डरता हू, बिल्कुल नही डरता। सच पूछें तो ऐसी कहानी लिखने मे भारी खतरा है। अक्सर

होता यह है कि ऐसी कहानियां खुद लेखक के जीवन के ईर्द गिर्द ही घूमने लगती है। और कहानी का असली पात्र कहीं दूर शून्य में विलीन हो जाता है।

लेकिन फिलहाल आज गजाधर की कहानी सुनिये। मैं अपनी कहानी आपको फिर कभी सुनाऊंगा।

जैसा कि कमल ने बताया—

गजाधर तीस-चालीस घरों वाले एक छोटे से गांव का गबद लड़का था। विद्यालय में उसकी स्थिति एक बुद्धू लड़के जैसी थी। गांव के विद्यालय की पढ़ाई समाप्त होते होते उसके गरीब और वृद्ध माता पिता स्वर्ग सिधार गये थे। कॉलेज की शिक्षा उसके एक दूर के चाचा ने पूरी करवाई।

कॉलेज की हवा उसको बिल्कुल नहीं लगी। यहां भी वह गांव जैसा ही दब्बू बना रहा। पर यहां एक फर्क जरूर आया। अपनी एकान्त प्रियता के कारण वह अध्ययनशील हो गया और पूरे कॉलेज में वह प्रतिभावान छात्र के रूप में जाना जाने लगा।

यही कारण था कि प्रोफेसर गिडवानी ने उसे अपने प्रिय छात्रों में शामिल कर लिया। यदा कदा वह प्रोफेसर साहब के निवास पर भी आने जाने लगा। लेकिन उसके स्वभाव का दब्बूपन बरकरार रहा।

प्रोफेसर साहब की एक खूबसूरत लड़की थी। नाम था अमला। अमला सौंदर्य की देवी थी। घनी पलकें, भरा भरा बदन, काले लम्बे केश, हिरनी जैसी आंखें और गोरी गुलाब बांहें जो हर वक्त किसी को अपने मोह से लगा लेने का आमंत्रण देती रहती।

गजाधर के दिल में अमला ने अपना स्थान बना लिया था। लेकिन यहां भी उसका दब्बूपन सामने आ खड़ा होता। वह अमला से मिलना चाहता था। उससे बात करना चाहता था। पर सामना होते ही वह घबरा जाता। और अमला इस सबसे बराबर अपनी पढ़ाई लिखाई में लगी रहती। शायद वह किसी बड़े कम्पीटीशन की तैयारी में व्यस्त थी।

गजाधर का कॉलेज की पढ़ाई समाप्त हो गई थी। गर्मी की छुट्टियां चल रही थीं। इस बार वह गांव नहीं गया। हॉस्टल में रह कर वह अपने रिजल्ट की

प्रतीक्षा कर रहा था। फिर वहा गाव मे उसके लिए बैठा ही कौन था। यहा कम मे कम प्रोफेसर साहब और उनकी बेटी अमला तो थे।

अब उसका ज्यादातर समय प्रोफेसर साहब के यहा गुजरता।

गजाधर मन ही मन अमला को प्यार करने लगा था। वह सोचता कोई उससे पूरी दुनिया माग ले और बदले म उसे अमला दे दे तो वह हिच-किचाएगा नही। पर यह सब उसके वश म कहा था। काश ! ऐसा सम्भव होता।

लेकिन विधाता को कुछ और ही मन्जूर था।

गजाधर अन्दर ही अन्दर घुटता रहता। अमला से इक तरफा प्रेम मे उसके दिन का चन और रातो की नीद हराम हो गई थी। उसके देखने और बात करने का अन्दाज बदल गया था। उसके बदले व्यवहार को देख कर प्रोफेसर साहब ने उससे किसी अच्छे डॉक्टर से कन्सल्ट करने को कहा तो गजाधर ने उनके सुझाव को हसी मे उडा दिया।

अब वह इस ताक मे रहता कि अमला कही एकान्त म मिले तो वह उसे अपने दिल की बात कहे।

जब ऐसा कोई सयोग नही बठा कि वह अमला को अपन दिल की बात बता सके, तो वह बेचन और परेशान हो गया। उसकी नीद तो पहले से ही गायब थी। अब उसका खाना पीना भी छूट गया। कपडे गन्दे रहन लगे। चेहरे पर दाढी बढ गइ। एक दिन इसी तनाव ग्रस्त स्थिति मे उसने अपने शरीर के कपडो को तार तार कर दिया।

प्रोफेसर साहब उसकी इस दुदशा से अत्यधिक दुखी थे, उन्होने गजाधर को खूब समझाने की कोशिश की, पर उनके समझाने का कोई परिणाम नही निकला। बल्कि दिन ब दिन गजाधर की बेहूदा हरकतो मे बढोतरी होने लगी।

प्रोफेसर साहब ने थक हार कर उसे मेन्टल हास्पिटल म एडमिट करा दिया। पूरे एक माह बाद गजाधर को हास्पिटल से छुट्टी मिली। उसके दूर के रिश्ते के चाचा आ गये थे। डाक्टर ने उन्हे सलाह दी कि जितना जल्द हो सके गजाधर की शादी कर दी जाय। ताकि दूसरे अटेक मे उसे बचाया जा सके।

गजाधर अपने चाचा के साथ उनके गाव चला गया। उसका रिजल्ट आ गया था। उसने प्रथम श्रेणी मे उत्तीण किया था। उसके चाचा ने शुभ मुहुत देख कर एक सीधी सादी लडकी से उसका व्याह कर दिया।

शादी के दसवें दिन गजाधर को नौकरी का परवाना मिला।

गजाधर की खुशी का ठिकाना नही रहा। उसे एक साथ इतनी खुशिया मिली कि वह मस्त हो गया तथा अपने को ससार का सबसे भाग्यशाली व्यक्ति समझने लगा।

वह अपना विगत भूल चुका था। और वतमान से अत्यधिक प्रसन्न था। दब्बू और चुप्पा तो वह अब भी था मगर जो बात वह कह नहीं पाता था उसे अब वह कलम से कह देता।

लाइब्रेरियन की नौकरी के कारण उसे पुस्तकें पढ़ने का खूब अवसर मिलता। देखते ही देखते वह एक बहुत बडा लेखक बन गया। उसकी लिखी कहानिया देश के प्रतिष्ठित अखबारो और पत्रिकाओ मे छपने लगी। उसकी कहानियो के कई सकलन भी आ गये और अपने लेखन के शैशव काल में ही उसे राज्य स्तरीय पुरस्कार भी मिल गया।

अब उसकी महत्वाकाक्षाए बहुत बढ गई थी।

वह सदा अपने ख्यालो की दुनिया मे खोया रहता।

अब वह स्वय को देश का एक बहुत बडा साहित्यकार समझने लगा था। यहा तक कि उसने नितट के मित्रो से भी मिलना जुलना छोड दिया था।

अब वह पूरी तरह आत्म केन्द्रित हो गया था। उसे लगता उसका इटरव्यू जी टी वी से प्रसारित हो रहा है। कभी लगता उसकी कहानी '[illegible]' [illegible] में छपी है। कभी दूरदर्शन पर कोई नयी फिल्म आ रही होती तो उसे महसूस होता यह उसी की कहानी पर बनी है। वह ख्यालो ही ख्यालो में बम्बई पहुच जाता और [illegible] तथा बासु भट्टाचार्य से अपनी कहानियो पर बातें करता [illegible] कान्ट्रैक्ट पर साइन कर आता।

हर साल उसकी कहानी पर बनी कोई न कोई फिल्म गोल्डन जुबली मनाती। अब गजाधर एक काल्पनिक दुनिया मे विचरण कर रहा था। जिस दुनिया म वह सबसे अधिक सम्मानित एव धनाढ्य व्यक्ति था। गजाधर का लेखन चूक गया था। उसके मस्तिष्क ने उसका साथ देना बन्द कर दिया। वह सिर्फ ख्यालो की दुनिया म खोया रहता।

अचानक एक दिन गजाधर की इस काल्पनिक दुनिया मे भूचाल आ गया। जब उसने अखबार मे पढा कि अमला उसके शहर मे कलक्टर बन कर आ गई है। उसकी विलुप्त स्मृतिया ताजा हो गई। सोये अरमान जाग उठे।

एक दिन वह अमला से उसके निवास पर मिलने गया।

अमला के नौकर-चाकर और शाही ठाठ देख कर गजाधर दग रह गया। अमला उसे अप्रतिम सौन्दय की स्वामिनी लगी। अमला अभी तक कुमारी थी और वह एक रुग्ण तथा मरियल पत्नी का पति और दो बच्चो का बाप।

गजाधर का सारा अहम रेत के महल की तरह ढह गया। उसका बरसो पुराना दब्बूपन जाग उठा। अमला के समक्ष वह अपने को अत्यधिक बौना महसूस करने लगा।

अमला से वह ज्यादा बातचीत भी नही कर पाया। जल्दी जल्दी चाय सुडक कर वह कलक्टर निवास से बाहर निकल आया।

पन्द्रह साल बाद वह अमला से मिला था। उसे पूरी दुनिया बदली हुई नजर आने लगी। उसका मन उचाट हो गया। वह अपने को दुनिया का सबसे बदकिस्मत और असहाय व्यक्ति समझने लगा। अब वह अपनी बनाई काल्पनिक दुनिया के खोल मे बाहर आ गया था तथा जमाने की सच्चाइयो से रूबरू हो रहा था।

उसे दुनिया बेमजा और फिजूल लगने लगी।

गजाधर के दिन का चैन और रातो की नींद फिर हराम हो गई। उसका व्यवहार बदल गया। खाना-पीना छूट गया। चेहरे पर दाढी बढ गई। और वह फिर से बेहूदा हरकतें करने लगा। कई दिनो से वह तनाव ग्रस्त चल रहा था।

और आज वह चल बसा।

गजाधर के मित्र कमल ने जब यह सूचना दी तब मुझे कोई आश्चर्य नहीं हुआ क्योंकि यह तो होना ही था। ऐसे जीनियस व्यक्ति जिनकी महत्वाकांक्षा अतृप्त रह जाय वे या तो पागल हो जाते हैं या फिर आत्महत्या कर लेते हैं। गजाधर की यह मौत भी आत्महत्या से किसी मायने में कम नहीं थी।

अच्छा हुआ जो गजाधर चल बसा। अगर वह जिन्दा रहता तो उसका पागलपन हम सबको भी पागल बना देता।

